बरनम वन

शेक्सपियर के मैकबेथ का पद्यानुवाद

रघुवीर सहाय



राजकमल प्रकाशन

नयी दिल्ली पटना

प्रथम प्रस्तुति 3 8 नवम्बर 1979, रगमण्डल, राष्ट्रीय नाटय विद्यालय, खुला रगमच, रवीन्द्र भवन, नयी दिल्ली, निर्देशक ब व कारत, ग्रावरण चित्र मकबेथ की भूमिका मे के के रैना, छायाकार सुरेन्द्र राजन

इस ग्रनुवाद को ग्रशत ग्रथवा पूणत खेलने के लिए ग्रनुवादक की लिखित ग्रनुमति लेना ग्रावश्यक है

मूल्य रु 18 00

रघुवीर सहाय

प्रथम सस्करण 1980

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
8, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली 110002

मुद्रक ग्रजय प्रिंटस,
नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032

BARNAM VAN
Hindi translation in verse of Shakespeare s
MACBETH *by* Raghuvir Sahay
Rs 18 00

विमलेश्वरी सहाय को,
परीक्षा की घड़ियों मे
जिनके सहयोग के लिए
चिर-कृतज्ञ हूँ



मक्वथ   व० क० रना



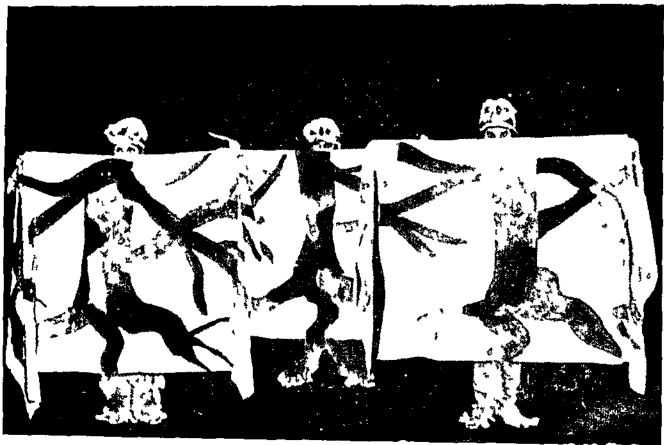
परिचारिका अमिता मिश्र मकबेथ पत्नी उत्तरा बावकर



मैक्डफ राजेश विवेक



मैक्बेथ के० के० रैना बांको वीरेन्द्र राजदान, मैकबेथ पत्नी उत्तरा बावकर



तीन विचित्र बहनें मधुमालती, अनिला सिंह डाली अहलूवालिया

प्रस्तावना

यह अनुवाद करना मेरे लिए एक रचनात्मक अनुभव था। अंग्रेजी मे शेक्सपियर के नाटको का मूल आधार भाषा है और वह आवाज के उतार चढाव को अभिनय के लिए इस्तेमाल करती है। इसीलिए भीतरी और बाहरी दोनो घटनाओ के अनुसार वह बढती, ठिठकती, मुडती और घूमती चलती है। हिन्दी म मैंने कवित्त छन्द चुना जिसमे हर मात्रिक छन्द की अपेक्षा आवाज के अभिनय की कही अधिक सम्भावना है और जो एकाधिक एव विविध रागस्थितिया के अनुकूल ढल सकता है। आरम्भ मे, और एक दो स्थला पर अन्यत्र, मात्रिक छन्द का सीमित प्रयोग किया गया है परन्तु वह भी नाटकीय कारणो से, मैकबेथ पत्नी के प्रलाप का दृश्य जो मूल मे गद्य मे है तथा अन्यत्र जो स्थल गद्य मे हैं उन्हें गद्य में ही रहने दिया है। मैलक्म मैक्डफ सवाद का दृश्य पद्य के स्थान पर गद्य मे परन्तु उसका शेषाश पद्य म कर दिया है क्योंकि मेरी समझ म उसी तरह वह अधिक प्रभावशाली होता। शेष नाटक मूल के अनुसार पद्य म ही है। शेक्सपियर की भाषा कही कही इतनी सरल है कि मानो अपने युग के आडम्बर के बीच वह रचनात्मक अद्वितीयता की एक चमक हो। ऐसे स्थलो पर अनुवाद मूल जैसी सरल भाषा मे रहे, यह आवश्यक जान पडा। किन्तु जिन स्थला पर नाटककार की भाषा क्लिष्ट, जटिल या आडम्बरमयी है और जहां उसका एक नाटकीय उद्देश्य है वहा उसकी रक्षा वैसी ही भाषा म करने का प्रयत्न किया है। कुछ स्थल अवश्य ऐसे हैं जहां शेक्सपियर मेरी समझ मे अकारण ही विलम्बित और दुरुह होते हैं या फिर आज के रगमच पर उतना स्पष्टीकरण आवश्यक नही

जितना वह करते हैं, वहाँ उनका अनुकरण नहीं किया है।

इस तरह यह अनुवाद प्रायः प्रत्येक पंक्ति का अनुवाद है, किन्तु वास्तव में यह पंक्तियों का नहीं, वाक्यों की आवाज़ का अनुसरण करता है और वही गूँज पैदा करने की कोशिश करता है जो एलिज़ाबेथ-युग के मंच पर होती रही होगी।

मैंने मैकबेथ और बरनम वन तथा उसके वाह्य जन को मुख्य मानकर स्कॉटलैण्ड और इंगलैण्ड के राजवंशगत और देशकालपरक सभी सन्दर्भ छोड़ दिये हैं। इसी तरह शेक्सपियर की भाषा में जहाँ जहाँ अत्यन्त स्थानीय पहचान के प्रसंग आते हैं—जैसे डाइनों के एकाधिक दृश्यों में जो कि तत्कालीन पिशाच विद्या से आक्रान्त हैं—वहाँ वहाँ उन्हें छोड़ या बदल दिया है। पात्रों के नाम यथावत् रखते हुए भी कथा को सार्वजनीन बनाना चाहा है और सप्रयास देशीकरण तो नहीं ही किया है।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के रंगमण्डल के लिए कारंतजी ने जब मुझे इस अनुवाद का काम सौंपा था तब हम दोनों जानते थे कि यक्षगान शैली का प्रयोग करने से नाटक के कुछ दृश्यों का फिर से सम्पादन करना होगा। इसीलिए ऐसे सम्पादन का काम अनुवाद के समय नहीं किया गया ताकि यक्षगान शैली का निर्देशक अपने अनुभवों के अनुसार दृश्यविधान में परिवर्तन करने को, और यही नहीं कोई भी निर्देशक भविष्य में इस अनुवाद को यथार्थवादी या अन्य किसी भी शैली में प्रस्तुत करने को स्वतन्त्र रहे। अनुवाद की प्रक्रिया में समय समय पर निर्देशक से परामर्श उपयोगी रहा और अभ्यास के समय भी किंचित कमियों को पकड़ा और दूर किया जा सका, जिसके लिए मैं निर्देशक और रंगमण्डली का आभारी हूँ। प्रथम प्रदर्शन के बाद अनुवाद का एक बार फिर परिमार्जन किया जिसमें श्री स० ही० वात्स्यायन और श्री सोठार पूर्जे के बहुमूल्य सुझावों का सहयोग मिला, इसके लिए मैं उनका भी कृतज्ञ हूँ। पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार करने में मेरी पुत्री हेमा सहाय ने विशेष सहायता की, यह उल्लेख करना भी मुझे प्रीतिकर होगा।

रघुवीर सहाय

निर्देशकीय

किसी भी निर्देशक के लिए शेक्सपियर एक आदरमूलक भय और एक चुनौती का भाव पैदा करता है। मैं भी इसका अपवाद नही हू। किन्तु विनम्र और समर्पित भाव से शेक्सपियर को छुआ जाये तो नयी नयी सम्भावनाएँ स्वयमेव खुलने लगती हैं। काफी पहले कर्नाटक के ही एक निर्देशक बन्धु ने मुझे कथाकली म हैमलेट करने के लिए प्रेरित किया था। किन्तु कथाकली एक मुद्रा प्रधान एव इतनी शास्त्रीय शैली है कि उसकी जटिलताओ मे उलझकर प्रस्तुति के अत्यन्त दुरूह होने की आशका बनी रहती है। अत मैंने कथाकली के बजाय यक्षगान को चुना जिसमे उन्मुक्त गति एव प्रबल नाटकीयता है। शेक्सपियर को उसी के देश की नाट्य शैली मे प्रस्तुत करने मे मैं स्वय को सक्षम नही मानता। और यदि वही शैली अपनाऊँ तो मुझे लगेगा कि मैं झूठ बोल रहा हूँ। अत यक्षगान का प्रयोग मात्र प्रयोग के लिए नही बल्कि अपनी विश्वसनीयता बनाय रखन के लिए किया गया है। शेक्सपियर की त्रासदिया मे और विशेषकर मैकबेथ म जो वीर, रौद्र, भय, अद्भुत, करुण आदि रस प्रचुर मात्रा मे मौजूद हैं वे सार्वभौमिक तो है ही किन्तु अपनी अतिमानवीय स्थितियो और चरित्रो के कारण यक्षगान के सन्दर्भ मे मुझे अत्यन्त निकट के लगते हैं। नाटक म चरित्रो का प्रवेश प्रस्थान, युद्ध एव भावनात्मक तनावो को शरीर, गति और हाव भाव आदि के माध्यम से प्रदर्शित करन का विशेष गुण यक्षगान ने विकसित किया है। इस प्रस्तुति मे यक्षगान म मैकबेथ नही अपितु मैकबेथ म यक्षगान के तत्वो का प्रयोग किया गया है।

मैकवेथ का कथ्य मेरी दृष्टि म प्रबल महत्त्वाकाक्षाम्रा का असीम जगत है जिसम से बाहर निकलना किसी के लिए भी सहज नही। इसीलिए इस प्रस्तुति का नाम बरनम वन है। हम स्वय अपने लिए डाइना का निर्माण कर लेते हैं, दु स्वप्नो के रहस्यमय ससार म भटकते हैं और व्यथाम्रा के अधकार म घिर जाते हैं। कि तु दुखद होते हुए भी यह यात्रा दिलचस्प है क्याकि महत्वाकाक्षा की इस यात्रा मे म्रादिम मानवीय भावनाम्रा और सवेदनाम्रा का म्रात्मीय परिचय मिलता है।

इस प्रस्तुति म सगीत का म्राधार यक्षगान ही है कि तु अपने पूण एव शुद्ध रूप मे नही। अनुवाद मे कवित्त छन्द का प्रयोग हुआ है जिसकी गति यक्षगान के प्रमुख वाद्य चण्डा की गति से पूणरूपेण मेल खाती है। शुद्ध यक्षगान का सगीत एव वाद्य अपने क्षेत्र मे सुपरिचित एव लोकप्रिय है किन्तु इनसे अपरिचित दशको के लिए इनकी एकरसता बोझिल न हो इसीलिए एशियाई वाद्यो तथा घण्टियो, गाग म्रादि का प्रयोग भी किया है। यक्षगान के लगभग सभी चरित्र पौराणिक चरित्र हैं और प्रत्येक चरित्र की अपनी विशेष भूषा से एक पहचान है। अत इस प्रस्तुति म यक्षगान के वेश प्रयोग न करके बाली, जापान, कम्बोजिया, बर्मा, इन्दोनेसिया म्रादि एशियाई देशा की विभिन्न रग परम्पराम्रो से वेशभूपा की प्रेरणा ली गयी है।

नाटक के अनुवाद को रघुवीर सहाय ने यक्षगान के लिए किसी प्रकार से सीमित नही किया है, वह मूल के समानान्तर पूण है और किसी भी शली मे प्रस्तुत किया जा सकता है।

ब व कारन्त

मच पर

डाइर्ने मधुमालती, अनिला सिंह, डाली अहलूवालिया, *चर* जी पी नामदेव, *डकन (स्काटलण्ड नरेश)* अनग देसाई, *मराकम, डोनालबेन (डकन पुत्र)* पवज वपूर, रघुवीर यादव, *लेनोक्स* विजय वश्यप, *रोस* बसन्त जोसलवर, *एगस* इक्बाल मेह्दी, *मक्डफ* राजेश विवेक, *मैक्बथ* के के रैना, *बांको* वीरेंद्र राजदान, *मक्बेथ पत्नी* उत्तरा बावकर, *परिचारिकाएँ* अमिता मिश्रा, नूतन सूय, *हत्यारे* प्रेम मटियानी, वागीशकुमार सिंह, अनग देसाई, *फिलयास* अमिताभ श्रीवास्तव, *सामन्त* जी पी नामदेव अशोक निशेप, इक्बाल महदी, हनुमान प्रसाद, *प्रेत* वागीशकुमार सिंह इक्बाल मेह्दी, हनुमान प्रसाद, अमिता मिश्रा, विजय वश्यप, वसन्त जोसलवर, अशोक निशेप, वागीशकुमार सिंह, रघुवीर यादव, अनग देसाई अमिताभ श्रीवास्तव, गुरुचरण वेदी, *चिकित्सक* अशोक निशेप, *धाई* अमिता मिश्रा, *सनिक* गुरुचरण चन्नी, राधेश्याम, रमेशचन्द्र, *योद्धा* प्रेम मटियानी

नेपथ्य मे

मच परिकल्पना, वस्त्रविन्यास तथा रगापकरण रोबिन दास, *सहायक मच परिकल्पना* वसन्त जोसलवर, अशोक निशेप, *मच निर्माण* तरसीमलाल वमा, दिलीपचन्द, *सहायक वस्त्रविन्यास* उपा वैनर्जी, अमिता मिश्रा नूतन सूय वागीशकुमार सिंह, करणसिंह, *रगापकरण सहायक* रघुवीर यादव, डाली अहलूवालिया, ई जान शाँ, चुन्नीलाल, *प्रकाश परिकल्पना* जी एम मराठे, *सहायक* सुरेखा सीकरी, राधेश्याम, *सगीत सहयोगी* ज्ञान शिवपुरी, *कोरस* उपा वैनर्जी, नूतन सूय, मनमोहन, नामदेव *वाद्यवृन्द* एम श्रीधर हवार, बी बालकृष्ण, के देवदास राव, प्रदीप दत्त, *रूप सज्जा* इन्दु घोप, *प्रचार व्यवस्था* सुरेखा सीकरी, रजीत कपूर, *मच व्यवस्था* प्रेम मटियानी, *सहायक* अनिला सिंह

अंक 1 दृश्य 2

शिविर मे। नपथ्य म दुन्दुभि। सम्राट डक्न, मलकम, डोनालबेन लेनाक्स और अनुचरों का प्रवेश। एक लहूलुहान सनिक स मिलत है।

डक्न कौन है यह ? रक्तरंजित देह की दुदशा इसकी बोलती है
कि यह अवगत है नयी विद्रोह की गति से।
मलक्म यह वही है वीर जो निभय अथक
मेरे लिए आद्यन्त लडता रहा
बन्धु आओ,
छोडकर रण चले जब तुम कहो तब का हाल
राजा से
सनिक अनिश्चित थी विजय,
जैस दो थके तराक लिपटे हो परस्पर
तर पात नहीं हो
राजद्रोही पक्ष का नेता कुटिल है
क्रूरताएँ सम्पुंजित हैं बुद्धि मे उसकी
सैन्यबल है
भाग्यदवी अक म बैठी हुई है रक्षिता सी

किन्तु सब कम है
बहादुर मैकबेथ ललकार आगे बढा
धुआँ उठने लगा उसके दुधारे पर
शत्रु के ताजे रुधिर से
धसा औ' उस नीच के सामने पहुचा
कुछ न बोला
नाभि से वक्ष तक उसको चीरकर रख दिया
सिर प्राचीर पर लटका दिया प्रभुवर

डकन वाह उत्तम वीर

सनिक ज्यो जहा से सूय उगता है, वही से फूटते है भयकर तूफान
त्या जहाँ से स्वस्ति आती है वही से क्लेश आता है
सुनो, राजा सुनो
शौय म था सत्य का बल
शत्रुदल के पाव उखडे
तभी राजा नार्वे ने कुमुक भेजी
पुन हमला हुआ

डकन कि तु मेरे शूरनायक मैकबेथ, बांको न पिछडे !

सनिक कही गौरैया गरुड को, बाघ को खरहा डराता है ?
दोगुने बल से किया प्रतिघात दोनों ने
शोणितस्नान करना चाहते थे वे कि थे दुहरा रहे
बलिदान ईसा का
कह नही सकता
मगर ठहरो, घाव मेरे खुल रह हैं

डकन शब्द तेरे सोहते हैं तुझे जैस घाव तेरे
सुव्रत दोनो हैं
इसे ले जाओ, चिकित्सा करो

सैनिक को कोई अनुचर ले जाता है। रोस और एगस का प्रवेश

कौन आता है ?

मलकम रोस का सामन्त

लेनाक्स कितना व्यग्र है यह
रोस जय हो
डंकन कहाँ होकर आ रहे हो रोस
रोस फाइफ से महाराज
वहाँ नार्वे की पताका गगन का अपमान करती थी
वहाँ स्वेनो नार्वेपति विपुल दलबल संग
द्रोही पतित काडर की मदद से युद्ध करता था
अन्तत प्रत्यक्ष आकर मैक्बेथ ने
घात पर प्रतिघात दे देकर निरन्तर
थका डाला आततायी, विजयश्री पायी
डंकन अहा, आनन्द
रोस स्वेनो गिडगिडाता है
मगर हम उसे अपने खेत सनिक
दफन करने नहीं देंगे
जब तलक धर नहीं देगा स्वर्णमुद्रा दस हजार
डंकन अब और नहीं धोखा देगा वह काडर का सामन्त हमें
घोषणा करो उसके वध की
उसकी पदवी से करो मैक्बेथ को भूषित
रोस यही करता हूँ
डंकन काडर ने जो खोया है वह पाया भद्र मैक्बेथ ने

अंक 1 दृश्य 3

उजाड़, गरज, तीनों डाइनों का प्रवेश

डाइन 1 कहा रही वहिनी

डाइन 2 सूअर मार गयी रही

डाइन-3 तू कहाँ रहनी

डाइन 1 ठेकेदारा का सरदार

उसकी औरत ठस्सदार

थोछा भरके चना चबेना

चबात रही चबर चबर चबर चबर

हम कहा हमहूँ के द ना

तो छिनार कहन है चल चुड़ैल छूमन्तर

मैं जाऊँगी राजभवन म

डाइन 2, 3 जाओ वहिनी

डाइन-2 अरे एमी मत मारूँगी सबकी सब नकटे हो जायेंगे

इक नकट को आग करके सब नकिया करके गायेंगे

नकटा पर राज कर नकटा परजा नकटी राजा नकटा

बारी बारी स सब नकटा को नकट राज दिलायेंगे

डाइन 3 सुनो नगारा मकबेथ पधारा

सब तीनो डाइन सुबह म बसेरा कर
रात होने पे जगल का फेरा कर
कौग्रा मूते स्यार नहाये
ग्रौंधी हँडिया कुतिया खाये
अगडमबगडम लबरलबार
फटफटाग जन्तर तैंयार

मकबेथ और बांको का प्रवेश

मकबेथ ग्राज का जसा दिन जिसम रुपहली धूप भी है ग्रौर मनहूस धुध भी,
पहले कभी नही देखा !
बांको फोरेस कितनी दूर होगा ? कौन हैं य ?
जिनका भेप ग्रौघड ग्रौर रूप बीहड है
जो धरती के जीव नही लगते किन्तु हैं इसी धरती पर
बोलो ! क्या मनुष्यो से बोलते हो तुम ?
सुन पा रहे हो तुम क्योंकि तुम तीनो ने ग्रपनी
भुरायी उँगली सूखे ग्रोठ पर रक्खी
तुम ग्रौरत होगी पर तुम्हारी सूरत यह नही कहती
मकबेथ बोलो, जीभ हो तो, कि कौन हो
डाइन-1 जयतु मैकबेथ जय ग्लेमिस के राजपुत्र
डाइन-2 जयतु मैकबेथ जय काडर के राजपुत्र
डाइन 3 जयतु मैकबेथ जयतु राजा मैकबेथ होगा
बाको मैकबेथ, तुम कॉप क्यो गये ? भयभीत से क्या हो जबकि
ये शब्द सुखदायक हैं ?
ह ईश्वर
तुम माया हो कि वही हो जो तुम्हारी काया है ?
मेरे श्रेष्ठ बन्धु को तुमने प्रशस्ति की
राजयोग उसको बताया भविष्य म
ग्रौर वह मन्त्रमुग्ध सुनता है
पर मुझसे तुम नही बोलती
दिव्यदृष्टि स तुम भविष्य का ग्रजान लेख देख यदि सकती हो

वह सकती हो कि कौन बीज अँकुरायेगा कौन नही
तो मुझसे बोलो
मुझे कोप का न भय है न चाह अनुकम्पा की

डाइन 1 जय
डाइन-2 जय
डाइन 3 जय
डाइन-1 मैकबेथ स न्यूनतर श्री फिर भी महत्तर
उतना प्रसन्न नही फिर भी प्रसन्नतर
तुमसे उत्पन्न पुत्र होंगे नप, तू नही
एवमस्तु, जय जय जय मैकबेथ, बाको
बाको, मैकबेथ, जय जय जय

मकबेथ ठहरा अधूरी है बात अभी, और कहो
पिता के न रहने पर ग्लेमिस का राजपुत्र मैं हुआ, सही है
काडर का कसे किन्तु जब कि काडर का राजपुत्र फलता फूलता है ?
और राजा का पद तो असम्भव है
तुम कहाँ से यह अजब जानकारी लायी हो
और क्यो ऊसर के इस पथ पर रोककर
हमको दिखाती हो लेखा प्रारब्ध का ?
उत्तर दो ?

डाइन लोप हो जाती हैं

बांको धरती म बुलबुले होन हैं जमे पानी मे हैं और य वही तो हैं
कहा गयी ?

मकबेथ लोप हुई व्योम म जो दिखती देह थी
फूक सी समीर म बिला गयी
रहती कुछ और दर

बांको क्या जिनकी बात हम करत हैं वे कोई सचमुच थी ?
या कि बावलीबूटी खाकर हतबुद्धि हो गये हैं हम ?

मकबेथ तुमसे उत्पन्न होयेंग नप

बांको तुम नप होग

मकबेथ काडरसामन्त भी नही कहा था उसन ?

वाको ठीक यही शब्द थे यही अर्थ । कौन है ?

रोस और एगस का प्रवेश

रोस डंकन को जानकर तुम्हारा जयसंवाद हृष्ट है
विक्रम तुम्हारा विद्रोह दमन करने में
इतना विलक्षण है कि राजा अभी आश्चर्य करता है
और अभी आशंसा
नार्वे की कठिन शत्रुपंक्ति मध्य
मृत्यु के विचित्र चित्र आंक रहे थे जब तुम निरातंक
तांता बंध गया था चरों का तब
प्रत्येक लाता था एक और विजय का समाचार
एगस हम भेजे गये हैं कि राजा की ओर से तुम्हें धन्यवाद दें
और ले जायें दरबार में सादर
रोस और जो तुम्हारा पारितोषिक है उसके अग्रिम स्वरूप
मुझको आदेश है कि तुम्हें
काडर का राजपुत्र कहा जाय
परमयोग्य राजपुत्र धारो यह अलंकार
क्योंकि यह तुम्हारा है
बांको अरे ! क्या प्रेतात्मा ने सच कहा था ?
मकबथ काडर का राजपुत्र जीवित है, क्या यह आभूषण पराया
पहनाते हो ?
एगस राजपुत्र जो था वह जीता तो अब भी है
किन्तु भाग्य के कठोर चक्र के अधीन
उसे अपने प्राण भारी हैं
मिलीभगत उसकी नार्वे से थी
या घर का भेदी था
या दोनों विधि से वह देशदुर्दशा का कारण बना
मैं नहीं जानता
तो भी उस पापी का राजद्रोह के बदले
निश्चित है शिरोच्छेद

मकबेथ *स्वगत*

ग्लेमिस था अब हुआ काडर, श्रेष्ठतर फल शेष है

रोस और एगस स

तुम आय, कष्ट किया, धयवाद

बांको स

पुत्र अब तुम्हारे राजा होग । क्यो ? नही ?
क्योकि जो काडर का राज्य मुझे दे गये, उनकी यह
वाणी थी

बांको सम्भव है तुमको राजत्व मिले असदिग्ध
किन्तु यह विचित्र है कि अधकार के अनुचर
कभी कभी कैसे लुभाते है सच के टुकडे दे कर
और फिर कही के हम नही रहते
होता है सवनाश

रोस और एगस स

भाई, एक वात है

व उसकी ओर आते हैं

मकबेथ *स्वगत*

दो सत्य कह गये, मगनावरण है ये

प्रकट

धयवाद भद्रगण

स्वगत

मानव से प्रबल कोई गक्तियाँ बुलाती है
यह अनुभव शुभ नही हो सकता, अशुभ नही हो सकता

\

यदि यह अशुभ है तो क्या अभी अभी मैंने
यह प्रमाण पाया है ?
काडर का राजपुत्र आज ही बना हूँ मैं
शुभ है तो क्यों मन मे वह विचार उपजा है
जिसके सोचे से कलेजा मुँह को आये
वर्तमान के भय से भीषणतर है भविष्य
हत्या की कल्पना कोरी कल्पना ही है
पर क्यों वह झकझोर जाती है दुर्बल मन
संशय कर देता है कर्महीन
जो है, निस्सार है

बांको देखो, वह ध्यान मे डूबा है

मकबेथ स्वगत

दैवयोग दे सकता है यदि राजत्व मुझे
तो वही माथे पर मुकुट धरा सकता है मेरे कुछ किये बिना

बांको यह जो उपाधि नयी पायी है नये वस्त्र जैसी है
जो कि बदन पर बैठेगा बरते जाने से

मकबेथ स्वगत

होना है जो, हो
घडी प्रहर सब बीत रहे हैं घोर विषम दिन में से होकर

बांको श्रेष्ठ मैक्बेथ, हम ठहरे हैं

मकबेथ बुरा न मानो थका हुआ मन मेरा
भूली बिसरी बातों में खोया था। प्रिय स्वजनो, तुम प्रतिपल
मानस में बसते हो
चलो, नृपति के पास चलें
जो हुआ सहज वह गुनें अनन्तर समय गये
कुछ खुलकर इस बात पर करेंगे

बांको बड़े हर्ष से

मकबेथ तब फिर आज यहीं तक
आओ मित्रो

वे जाते हैं

अक 1 दृश्य 4

फोरेस, राजमहल का कमरा डकन, मलकम, डोनालबेन, लेनाक्स और अनुचरों का प्रवेश

डकन कॉडर का शिरोच्छेद हो गया ?
फिरे नही अभी वधिक ?

मलकम महाराज, अभी नही
किन्तु मैंने आखा देखा वृत्तान्त जाना है
उसने स्वीकार किया राजद्रोह
मागा फिर प्राणदान, पछताया
उसके जीवन मे था प्राणत्याग ही सबसे पूर्ण कर्म
सहज मरा
जसे कि अभ्यास नाटक मे किये था

डकन चेहरे पर पढा जाय अन्तर का अभिप्राय
ऐसी विद्या कोई नही बनी
भद्र पुरुष वह था
मैंने उस पर अविकल विश्वास किया

मकबथ, बाको, रोस और एगस का प्रवेश।

मक्बथ से

हे सज्जन बन्धु, अकृतज्ञ हूँ मैं
कितनी भी अनुशंसा कितने भी पुरस्कार
तुम पर मैं वार दूँ
श्रेय जो तुम्हारा है वे उससे कम होंगे

मक्बथ मैं तो कर्तव्य कर आप कृतकृत्य हूँ
प्रभुवर हमारा धर्म आपका प्रेय है
आपकी प्रतिष्ठा की, प्रेम की
राज्यसिंहासन की रक्षा ही धर्म है

डंकन इधर आओ
मैं तुमको सींचूँगा तुम लहलहाओगे

बांको से

तेजस्वी बांको, कोई कम नहीं है तुम्हारी सिद्धि
ख्याति भी न कोई कम पाओगे
आओ मैं हृदय लगा लूँ तुमको

बांको हृदय लगूँ तो भी मैं अर्पित हूँ चरणों में

डंकन मेरा आनन्द अश्रुओं में अवगुण्ठित है
आत्मीयो सुनो, सुनो
उत्तराधिकार आज देता हूँ
ज्येष्ठ पुत्र मैलकम को
कम्बर का युवराज आज से कहो उसको
उसके सम्मान से वही नहीं, सभी गौरवान्वित हों
अब हम इनवर्नेस को प्रस्थान करते हैं
ताकि हम तुम्हारे कुछ और निकट आ जायें

मकबथ ऐसा विश्राम जो कि आपकी न सेवा हो, व्यर्थ परिश्रम ही है
इसलिए आज्ञा दें मैं स्वयं जाऊँ
औ आपके शुभागमन से अपनी पत्नी को अवगत कर
उसको प्रसन्न करूँ

डंकन प्रिय काडर

मकबय   स्वगत

कम्बर का युवराज काय म मरे बाधा
क्या सीढी के इस जीन का लाँघ सकूँगा ?
नक्षत्रा, आलोक छिपा लो
भासित मत होने दो मरी गूढ कुटिल महदाकाक्षाएँ
अनदेखी कर लेने दो आँख को हाथ की
होने दो जो आँख देखने म डरती है, हो जाने दो

प्रस्थान

डकन   वीर है वह पुरुष बाको भद्र भी है
और उसके वचन मरी आत्मा को तृप्त करत है
चलो हम भी चलें
अगवानी करेगा मैकबथ
उत्तम स्वजन है

प्रस्थान

अंक 1 दृश्य 5

इनवर्नेस मकबथ के किले के सामने। मकबथ की पत्नी का पत्र पढ़ते हुए प्रवेश

पत्नी "मेरी विजय के दिन वे मुझसे मिली और मैं आश्वस्त हूँ कि जो मनुष्य को अज्ञात है उसे जानने की शक्ति उनमें है। मैं कुछ और पूछने को व्याकुल था कि वे शून्य बनकर लोप हो गयी। चकित मैं खड़ा था कि राजा का दूत आता है और मुझे काडर का राजपुत्र कहकर पुकारता है, जैसे थोड़ी देर पहले तीनों विचित्र बहनों ने पुकारा था और कहा था कि आगामी काल में मैं राजा होऊँगा। मैंने यह समाचार तुझको लिख भेजा है क्योंकि तू मेरे भाग्योदय की सगिनी है प्रियतमे और इसलिए कि तू अपनी उन्नति के आश्वासन से अनजान उसके आनन्द से वंचित न रह जाये। इसे अपने मन में रख, सुखी रह।
ग्लेमिस तो तू है और काडर हो गया है
और जो भविष्यवाणी हुई है, वह भी तू होगा
फिर भी मुझे तेरे स्वभाव से डर है
उसमें इतनी करुणा है कि वह
लक्ष्य को दबोच नहीं सकता है

तू गौरवलोलुप है
तुझमे महदाकाक्षा कम नही
हाँ, उस कौटिल्य की कमी है जो उसे सिद्ध करता है
चाहेगा जिसको तू व्याकुल हो
वह अभीप्ट चाहगा कि धम स प्राप्त हो
कपट करेगा नही
फिर भी तू अनधिकार चाहगा जीतना
महाभाग ग्लेमिस
चाहेगा तू तो वह पायगा
वह जा पुकार रहा है एसा कर मैकबथ
वह जिसके करन से डरता है अधिक तू
और चाहता है कम कि काम वह हो नही
आ, यहाँ आ, तेरे कानो मे
मैं अपनी आत्मा उडेल दूँ
और मेरे शब्द, व मोहजाल काट दें जो तुझे
राजमुकुट पाने से रोके हैं
राजमुकुट, जिसे भाग्यदवी शक्ति स मिलकर
तेरे सर धरने को आतुर है

चर का प्रवेश

	क्या समाचार है
चर	महाराज आज रात यही पधारेंगे
पत्नी	पागल हो गया है तू तेरे स्वामी क्या राजा के साथ नही हैं ? होत तो आयोजन करने को कहलाते
चर	एसा ही कहा है अभी दूत आया है हाफता इतना ही वह सका उखडे गले से वह
पत्नी	उसका उपचार करो, वह मगल सवाद लाया है

चर जाता है

कौआ भी फटे सुर से सूचित करता है
डंकन का अंतिम आगमन मेरे दुर्ग मे
नैसर्गिक शक्तियाँ, जो मन मे उपजाती हैं विकार
आयें, हर ले जायें मेरा स्त्रीत्व, मुझे सर से नाखून तक
निष्ठुर बर्बरता से भर जायें, गाढा कर जायें रुधिर
रुँध जायें करुणा की धमनियां पछताना यदि चाहूँ
ताकि नीच निश्चय से विचलित न हो सकूँ
आयें अदृश्य प्रेत जो कि कहीं उत्पात करते हों
मेरे स्तन दुह दूध ले जायें दे जायें गरल, घनी रात आये
धुंध नर्क की गाढी अपने पर ओढ ले
कि मेरी पैनी छुरी घाव नहीं देख पाये जो कि वह करती हो
देवता न झाँक सकें कहकर ठहरो ठहरो

मकबेथ का प्रवेश

ग्लेमिस महान, महाभाग काउडर
इन दोनो से गुरुतर पद के अनंतर अधिकारी
तेरे पत्र ने मुझे अजानी वर्तमान के पार पहुंचा दिया है
मैं भविष्य का अभी अनुभव कर सकती हूं

मकबेथ — प्रियतमे डंकन यहा आज रात आयेगा
पत्नी — और कब जायेगा ?
मकबेथ — कल का विचार है
पत्नी — कभी नही होवेगा उस कल का सूर्योदय
राजपुत्र, तेरा चेहरा एक कागज है
जिस पर लिखे रहस्य पढे जा सकते हैं
समय को छलने के लिए तू समय के समान दिख
आँखों मे, हाथों मे, बोली मे, स्वागत हो
पुष्प सा अबोध बन, हो उसमे छिपा साँप
आगंतुक का करना होगा ही इंतजाम
आज रात जो करना है मुझ पर छोड दे
इसके बाद हर दिन हर रात हमारा होगा निर्विवाद वर्चस्व
मकबेथ — परामर्श करेंगे

पत्नी तब तक दिख निर्विकार
जिससे संदेह न हो
बाकी मैं देखूंगी

प्रस्थान

कौआ भी फटे सुर से सूचित करता है
डकन का अन्तिम आगमन मेरे दुग म
नैसर्गिक 'क्तियाँ, जो मन म उपजाती हैं विकार
आयें, हर ले जायें मेरा स्त्रीत्व, मुझे सर से नाखून तक
निष्ठुर बबरता से भर जायें, गाढा कर जायें रुधिर
रुँध जायें करुणा की धमनियाँ पछताना यदि चाहूँ
ताकि नीच निश्चय से विचलित न हो सकूँ
आयें अदृश्य प्रेत जो कि कहीं उत्पात करते हो
मेरे स्तन दुह दूध ले जायें द जायें गरल, घनी रात आय
धुंध नक की गाढी अपने पर ओढ ले
कि मेरी पैनी छुरी घाव नही देख पाय जो कि वह करती हो
देवता न झाक सक कहकर ठहरो ठहरो

मकवथ का प्रवश

ग्लेमिस महान, महाभाग काउर
इन दोनों से गुरुतर पद के अनन्तर अधिकारी
तेरे पत्रा ने मुझे अजानी वतमान के पार पहुचा दिया है
मैं भविष्य का अभी अनुभव कर सकती हू

मकवेथ — प्रियतमे, डकन यहा आज रात आयेगा

पत्नी — और कब जायगा ?

मकवेथ — कल का विचार है

पत्नी — कभी नही होवेगा उस कल का सूर्योदय
राजपुत्र तेरा चेहरा एक कागज है
जिस पर लिखे रहस्य पढे जा सकते है
समय को छलने के लिए तू समय के समान दिख
आँखा म, हाथा मे, बोली में स्वागत हो
पुष्प सा अबोध बन, हो उसमे छिपा साँप
आगन्तुक का करना होगा ही इतजाम
आज रात जो करना है मुझ पर छोड दे
इसके बाद हर दिन हर रात हमारा होगा निर्विवाद वचस्व

मकवेथ — परामश करेंगे

पत्नी तब तक दिख निर्विकार
जिससे सन्देह न हो
बाकी मैं देखूंगी

प्रस्थान

अंक 1 दृश्य 6

इनवर्नेस के किले के सामने मशाल, डंकन, मलकम, डोनालबन, बांको, लेनाक्स, मकडफ, रोस, एगस और अनुचरों का प्रवेश

डंकन दुर्ग यह मनोरम है शीतल समीर मन्द मन मोहे लेता है
बांको वासन्ती सूचना देती हुई गौरैया
घर जहाँ बनाती है वहाँ वायु
कितनी स्वच्छ स्निग्ध हो जाती है
यह मैंने कई बार देखा है

मकबेथ-पत्नी का प्रवेश

आओ माननीया
प्रेम कभी कभी बड़ा अर
फिर भी उस प्रेम का कृ
इसका यह अर्थ है कि
तुमको जो कष्ट दिया
ईर कहो, हमें उसका
हमको

पत्नी आपने विगत मे उदार अनुकम्पाएँ की वत्सल
वतमान म झोली भर दी सम्मान से
इसकी तुलना मे हमारा सवस्व
यदि सेवा म अर्पित हो तो भी यथेष्ट नही
आप दीर्घायु हो

डकन काडर वे राजपुत्र कहाँ है
हम पीछे पीछे थे
हमने पथ म चाहा हम आगे जा निकलें
उनका मुहरा बनें
पर वह शहसवार हैं
और उनका तीव्र प्रेम, एड लगा
उनको हमसे पहले अपने घर ले आया
देवी, हम पाहुन हैं आज तुम्हारे घर के

पत्नी हम सेवक साधारण
अपना सब सब अपने, अपनो का अपना सब
आपकी धरोहर है

डकन दो अपना हाथ और ले चलो आतिथेय के समीप
वह मेरा परम स्नेहपात्र है
हमारी कृपादृष्टि उस पर रहेगी
अनुमति हो,

चुम्बन करता है। प्रस्थान

अंक 1 दृश्य 6

इनवर्नेस के किले के सामने मशालें, डंकन, मलकम, डोनालबेन बांको लेनाक्स, मकडफ, रोस, एंगस और अनुचरों का प्रवेश

डंकन दुर्ग यह मनोरम है शीतल समीर मन्द मन मोह लेता है

बांको वासन्ती सूचना देती हुई गौरैया
घर जहाँ बनाती है वहाँ वायु
कितनी स्वच्छ स्निग्ध हो जाती है
यह मैंने कई बार देखा है

मकबेथ पत्नी का प्रवेश

आओ माननीया
प्रेम कभी कभी बड़ा अत्याचार करता है
फिर भी उस प्रेम का कृतज्ञ होता हूँ मैं
इसका यह अर्थ है कि आज यहाँ आ करके
तुमको जो कष्ट दिया
ईश्वर से कहो, हमें उसका पुरस्कार दे
औ तुम भी दो हमको धन्यवाद

पत्नी आपने विगत मे उदार अनुकम्पाएँ की वत्सल
वर्तमान मे झोली भर दी सम्मान से
इसकी तुलना मे हमारा सर्वस्व
यदि सेवा मे अर्पित हो तो भी यथेष्ट नही
आप दीर्घायु हो

डकन काडर के राजपुत्र कहाँ हैं
हम पीछे पीछे थे
हमने पथ मे चाहा हम आगे जा निकलें
उनका मुहरा बनें
पर वह शहसवार हैं
और उनका तीव्र प्रेम, एड लगा
उनको हमसे पहले अपने घर ले आया
देवी, हम पाहुन हैं आज तुम्हारे घर के

पत्नी हम सेवक साधारण
अपना सब सब अपने, अपनों का अपना सब
आपकी धरोहर है

डकन दो अपना हाथ और ले चलो आतिथेय के समीप
वह मेरा परम स्नेहपात्र है
हमारी कृपादृष्टि उस पर रहेगी
अनुमति हो

चुम्बन करता है । प्रस्थान

अंक 1 दृश्य 7

मकबेथ के किले का आंगन। बायीं ओर दक्षिण का द्वार है, एक द्वार दायीं ओर कमरों मे खुलता है। इन दोनों के मध्य एक चबूतरा है जिससे पीछे एक और द्वार दिखता है। द्वार खुला हो तो ऊपर जाने का जीना भी दिखेगा। इसके सामने दीवाल से लगी एक मेज और बच है। मशालची और तश्तरिया लिये हुए सेवक मच के आर पार आते जाते हैं। जब वे दायां दरवाजा खोलते हैं, भीतर खाने पीनेवालों का शोर सुन पड़ता है। मकबेथ का दायें द्वार से प्रवेश

मकबेथ यदि मुझे निश्चय ही करना है वह काम
ठीक उस समय जबकि करना है
तो जल्दी करना ही ठीक है
यदि हत्या अपने दुष्परिणाम ढाँक ले
और उसके मरते ही फलदायक सिद्ध हो
जो है, जो होना है, इसी समय चोट एक
दोनो समेट ले

तो शायद यही, यहीं काल के किनारे
हम यहीं इसी दलदल में रह
और पार उतर जायें
किन्तु जानते हैं हम, बच नहीं सकते हैं दण्ड से
हिंसा की शिक्षा लौटकर
अपने शिक्षक को ही शिक्षित करती है।
समदर्शी न्याय का हाथ
हमारी विषमय मदिरा का ले करके पात्र
लगा देता है ओठ से हमारे ही
डंकन को यहां मेरा दोहरा संरक्षण है
एक तो प्रजा और सम्बन्धी हूं
अतः मुझे दोनों विधि
उसकी हत्या के विरुद्ध होना चाहिए
दूजे हूं आतिथेय,
मुझे उचित है कि बन्द कर दूं घर के कपाट जो घातक आता हो
न कि स्वयं वध करूँ
यों भी डंकन इतना सौम्य है
सत्ता पा करके भी निष्कलंक
उसके गुण देवदूत जैसे पावन स्वर में
हत्या का पातक धिक्कारेंगे
और घृणा के घुमड़ते अंधड़ के ऊपर अम्बर में उठती करुणा
शिशुवदना, मृदु, सुन्दर
या कि वायु के अदृश्य अश्व पर सवार स्वर्गदूत स्वयं
जन जन की आंखों में उस भीषण दृश्य को गड़ा देंगे
ऐसे कि जब आंसू बरसेंगे, पी लेंगे आंधियां
अपने संकल्प के घोड़े को एड़ नहीं लगा पा रहा हूं मैं
बस, मेरी लिप्सा है जो छलांग भरने का करतब दिखाती है
पर अपने घोड़े की पीठ पर नहीं गिरती

मकबेथ-पत्नी का प्रवेश

कौन ? तू ? तू कैसे ?

पत्नी उसका ब्यालू पूरा होने ही वाला है,
तू चला क्या आया ?

मकबेथ क्या उसने मुझको बुलाया है

पत्नी तू नही जानता कि हाँ बुलाया है ?

मकबथ अब हम इस काय मे और नही रत होगे
उसने सम्मान दिया है मुझे
औ' मैंने भाँति भाँति के लोगा से आशसा पायी
इसको तो नयी दीप्ति ले करके बन जाना है मेरा अलकार
हो जाना है नही इतनी जल्दी विनष्ट

पत्नी लालसा कि जिससे रूप तून सजाया था
क्या शराब मे धुत थी ? क्या वह सो गयी थी ?
कि अब जब वह जागी है
बुझी बुझी बीमार आखा से
अपनी पस्ती पर पछताती है
मैं अब यह समझी हूँ कि यही तेरा प्यार है
क्या तू उतना ही पराक्रमी होने से डरता है
जितना तू लाभी है ?
चाहता रहेगा तू वह जिसको
जीवन का मानता परमधन है
औ' अपनी ही आँखो मे कायर बनकर जियगा तू
उस बिलार की तरह जो मछली ताकती खडी रहती है तत्पर
पानी म भसने का साहस नही करती ?

मकबथ बस बस, अब बस भी कर
कर सकता हूँ वह जा मर्दों का काम हो
इससे अधिक करे वह मनुष्य है नही

पत्नी तो वह कौन पशु था जिसने मुझको
तरा मनोरथ बतलाया था ? वह तू ही था
और तब तू मनुष्य था
और अगर अब से कुछ और आगे जायगा
तो मनुष्य ही होगा और अधिक
जब न जगह निश्चित थी औ न समय
दोनो ही तुझको जुटाने थे

अब वे आप ही आप आन जुटे हैं यहाँ
और इस अनुकूलता से तू घबराया है
मैं पिला चुकी हूँ दूध
और जानती हूँ प्यार आँचल में कैसे उमडता है
पर गोदी में पडे इकटक निहारते
दुधमुहे के मुह से मैं छुडा लेती स्तन
पटक कर कपार फोड डालती
अगर कोई प्रण ऐसा किये हुए होती तेरी तरह

मकबेथ यदि असफल हम रहे ?

पत्नी असफल हम ?
अपने साहस को तू चाँपे रह उसी ठौर
तो हम होंगे न विफल
डंकन सोता होगा
क्यो नही ? दिनभर की थकन उसे सुला चुकी होगी
उसके दो रक्षक हैं
दोनो को मद्यमास से मैं परितृप्त कर
प्रज्ञा की प्रहरी स्मृति धूमायित कर दूगी
जडमति मस्तिष्क मुण्डमात्र रह जायगा
जब सूअर से सोते लुजलुजे मृतप्राय वे होंगे
तब मैं औ तू मिलकर
क्या नही कर सकते असुरक्षित डंकन का ?
कौन दोष घृत रक्षको पर धर नही सकते ?
क्योंकि वही होंगे अभियुक्त
मेरे तेरे अपराध के

मकबेथ तू केवल पुत्रो का प्रसव कर
तेरी कठोर धातु मद ही गढेगी और कुछ नही
लोग नही समझेंगे क्या यह
जब डंकन के कक्ष में सोते उन दोनो पर
रक्त हम लगा देंगे, उनके ही छुरे हम बरतेंगे
यह कि वह उन्होने किया ?

पत्नी इसके अतिरिक्त और क्या कोई
कहने का साहस कर पायगा

क्योंकि हम हाहाकार करते हुए
डंकन की मृत्यु पर बिलपेंगे

मकबथ मन मेरा स्थिर है अब मैं दृढसंकल्प हूँ
अपने सब अवयव संलग्न कर
कृत्य यह भयंकरतम साधूंगा
जा, रचा आनन्द, जिससे सब छले जायें
चोर चेहरा वह छिपा ले जो हृदय म चोर है

दोनों कमरे के भीतर चले जात हैं

दूसरा अंक

अंक 2 दृश्य 1

वही स्थान एक दो घण्टे बाद। पीछे के द्वार से बांको और फ्लियांस का मशालची के साथ प्रवेश। वे द्वार खुला छोड़कर आगे आते हैं

बांको कितनी रात गयी होगी बेटे ?
फ्लि० चाद डूबता है मैंने घडी नही सुनी
बांको और चाद बारह बजे डूबता है
फ्लि० शायद कुछ और बाद
बांको लो यह तलवार सम्हालो
स्वर्ग मे किफायतशारी हो रही है बत्तिया बुझा करके
यह भी लो

पटी उतारकर कटार देता है

नीद मेरी पलको पर बैठी है
पर मैं उसे भीतर न आने दूगा

देवता दयालु हो
मुझमे उन भयकारी दृश्यो का मत जगायें
जो कि नीद आने पर जगत हैं ।
मेरी तलवार दो, कौन है ?

मकबथ का मशालची के साथ दाय द्वार से प्रवेश

मक्बेथ	मित्र
बांको	कौन तुम ? सोये नही ? राजा सोता है
	वह बेहद खुश था, उसने बहुतर उपहार बाट हैं
	और यह एक हीरा तुम्हारी स्त्री के लिए भेजा है
	अपने सत्कार स सुख पाकर
	अनुपम सन्तोष मे मीठी नीद सो जाने के पहले
मक्बथ	हम प्रस्तुत नही थे
	इच्छा अशक्यता की अधीन हो गयी
	अन्यथा मनोनुकूल सेवा हम कर पाते
बांको	नही, सब ठीक रहा
	कल रात मैंने तीनो डाइनें सपन म देखी थी
	तुमको तो वे कुछ सच करके दिखा चुकी
मकबेथ	मैं उनकी बात नही सोचता
	तो भी जब एक घडी का समय पायेंग
	उस बारे मे बातें करके बितायेंगे
	यदि तुम चाहोग तो
बांको	जब भी तुम कहो
मकबेथ	साथ यदि दोग समय पर तुम तो गौरव पाओगे
बांको	हा, गौरववृद्धि से मेरी कुछ क्षति नही
	यदि मन निष्पाप और मित्रता निश्छल हो
मकबेथ	अच्छा, तब सुख स सो
बांको	धन्यवाद ओ तुम भी

बांको और फ्लियांस अपने कमरे म चले जाते हैं

मकबेथ जाओ,

अपनी स्वामिनी से कहो
जब मेरा पेय तैयार हो, घण्टे पर चोट दें
और तुम जाकर सो

मशालची का प्रस्थान । मकबेथ मेज़ पर बठता है

क्या यह कटार है जो मुझे दिखती है ?
मूठ मेरी ओर है, आ तुझे उठा लू
हाथ मे नही आयी फिर भी वही रक्खी है
अपशकुन, क्या तू सिफ दृष्टि की पकड मे आता है
हाथ की नही ?
या तू सिफ माया है मरे उद्विग्न मानस से उपजी हुई ?
मैं देख रहा हू तुझे उसी ठोस रूप मे
जिसम यह है कि जिसे मैंने खीचा है
तू मुझे वही लिये जाती है जहा मैं जाता था
औ तेरे ही समान मेरा हथियार होता
या बाकी इद्रियां मिल करके आखो को ठगती हैं
या आखो ने ही शक्ति सबकी हडप ली है
तू वहीं स्थिर है
औ' तेरे फल पर तरे हत्थे पर खून के धब्ब है
जो पहले नही थे
नही, नही, कुछ नही
यह मेरी वासना है जो रूप धरती है
आधा विश्व इस समय मुर्दे सा पडा है
और सुखद सेजो पर नींद क भयानक स्वप्न जागत है
प्रेत औ' पिशाच रगरेलियां मनात हैं
मौत अपने प्रहरी श्वान की पुकार सुन
चकित और चौकन्नी
बडे बडे डग भरती दबे पाव आगे को बढती है
दृढ धरती, मत सुन आहट मेरी
जान मत कि पाव मेरे किस ओर जात है
कही पाव तले कोई पत्थर बोल देगा ता

इस क्षण का घातक सहसा खो जायेगा
जो कि इस क्षण का शृंगार है

घण्टा बजता है

मैं जाता हूँ और करता हूँ कृत्य
डंकन, यह ध्वनि मत सुन
क्योंकि यह गुहार है काल की
तेरे लिए स्वर्ग से या नर्क से

पीछे के द्वार से जाता है और एक एक कर सीढ़ियाँ चढ़ता है। विराम

अक 2 दृश्य 2

मकबेथ पत्नी का हाथ मे प्याला लिये दाय द्वार स प्रवेश

पत्नी वह जिसने उह पस्त कर दिया
मुझे ढीठ कर गयी
प्यास बुझी उनमे आग मुझमे दहक गयी
शात शात, सुनने दो
उल्लू का अट्टहास था
यह पहरुआ है मनहूस रात का
वकद, काम पर अपन लगा हुआ
द्वार खुले हुए है
खा पीकर अलसाय रक्षक के खुर्राटे
अपन कत्तव्य का उपहास करते हैं
उनके प्याला मे वह मैंने मिलाया है
कि जीवन मरण अब बहस कर रहे हैं
वे मरे या कि जीत हैं

मकबथ नेपथ्य स
कौन है अरे ! अरे !

पत्नी हाय शायद वे जाग गये
और काम नही हुआ
कोशिश भर होना और काम नही हो पाना
घोर असमजस है
शात शात,
मैंने दानो की कटारे वहाँ रख दी थी
मैक्बेथ की दष्टि से बची नही रही होगी
उसमे मरे सोत हुए बूढे बाप का
उनहार अगर नहीं होता
तो मैं स्वय कर चुकी होती काम
तू मैक्बेथ!

वह पलटती है और मकबेथ बाय हाथ मे दो कटार लिये दिखायी देता है

मक्बेथ मैंन काम कर दिया, तूने कोई शोर सुना ?
पत्नी हा, सुना, उल्लू की हसी और झींगुर का रोना
क्या तू भी बोला था ?
मकबथ कब ?
पत्नी अभी
मकबथ जब कि मैं उतरा ?
पत्नी हाँ
मकबेथ सुनने दो

वे सुनत हैं

कौन सोया है वहाँ दूसरे प्रकोष्ठ मे —
पत्नी उसके दोना बटे

मकबथ हाथ आग बढाकर
यह भयानक दश्य है

पत्नी मुगता है भयानक वहना इसे
मक्वथ एक सोत म हँसा था और एक चीखा 'खून
जिससे दोना जग पडे, मैं खडा सुनने लगा
पर दोना ने प्राथना की और सो गये
एक न कहा ईश्वर रक्षा कर, 'एवमस्तु दूजे ने
मानो दोना न मुझे रँगे हाथा देखा हो
सुनता रहा कह नही पाया मैं 'एवमस्तु'
जब वह बोला था कि 'ईश्वर रक्षा करे'
पत्नी इस पर मत सोच इतना
मक्वथ किस कारण मेरे मुह म नही निकला 'एवमस्तु'
ईश्वर की रक्षा का योग्य पात्र मैं ही था
और 'एवमस्तु' मरे कण्ठ म रुँध गया
पत्नी इन बातो पर इस तरह नहीं सोचते
पागल हो जायेंगे
मक्वथ मुझे लगा मैंने सुनी कोई एक आवाज
'नीद अब न आयेगी
मैक्वथ ने नीद का खून कर डाला'
भोली नीद
नीद जो चिन्ता की गाँठें सुलझाती है
हर दिन का अन्त
थके श्रम का जो स्नान है
विक्षत मन का मरहम, प्रकृति का धम है
जीवन के भोज का रसमय अनुपान है
पत्नी क्या कह रहा है तू ?
मक्वथ चीत्कार गूजा था घर भर मे
नीद अब न आयेगी
ग्लेमिस ने नीद का वध किया
इसलिए काडर न सोयगा
मैक्वथ अब और नहीं सोयेगा
पत्नी किसका चीत्कार था ?
परमश्रेष्ठ राजपुत्र
क्यो अपनी ग्लानि से अपना पराक्रम क्षय करता है ?

जा, थोडा पानी ला
और हाथ से कुत्सित यह प्रमाण धो डाल
क्यो ले आया तू वहाँ से कटारें ये ?
इनकी जगह वही है
जा, इन्हे ले जा
औ' सोते सवको पर लोहू पोत दे

मकबेथ अब मैं न जाऊँगा
सोचकर कि मैंने क्या कर डाला डरता हूँ
उसका दुबारा देखने का साहस नही

पत्नी सकल्पहीन
मुझे दे कटारें
सोये और मुर्दा जड होते हैं चित्रवत्
शिशु डरा करते हैं भूत के मुखौटो से
यदि उसमे खून हुआ तो मैं रक्षको के मुह रँग दूगी
क्योकि यह उन्ही का किया प्रकट होना चाहिए ।

वह जाती है । खटखटाहट सुनायी पडती है

मकबेथ यह खडका कैसा है ? मुझको क्या हुआ है ?
हर आहट डराती है
ये मेरे हाथ है, ओह ! नोच लेंगे ये आँखो को
क्या सातो सिन्धु धो सकेंगे इनका लोहू ?
नही, महासागर रँग जायेंगे
हरे अतल कर देगा मेरा यह हाथ लाल

मकबेथ-पत्नी आती है

पत्नी मेरे भी हाथ रँगे हैं जैसे तेरे हैं
पर मेरा खून तेरे जैसा सफेद नही

खटखटाहट

खडकन सुन पडती है दक्षिण के द्वार पर

लौट चलें हम अपने कक्ष को
थोड़े पानी से धुल जायगी यह करनी
तब काहे की चिन्ता ?
दृढ़ता ने छोड़ दिया है तेरा साथ

खटखटाहट

सुन, फिर खटखटा
जा कपड़े रात के बदल ले कि शायद
हमको उठकर आना हो
यों उधेड़बुन में मत खोया रह

जाती है

मकबेथ अपनी करनी के सम्मुख आऊँ
इससे बेहतर है सुध अपनी बिसार दूँ

खटखटाहट

डंकन को जगाओ किवाड़ पीट पीटकर
अगर जगा पाओ तो

प्रस्थान

अक 2 दृश्य 3

खटखटाहट की आवाज बढती जाती है। एक शराबी दरवान का प्रवेश

दरवान कोई शायद खटखटा रहा है। हाँ, खटखटा ही रहा है। कोई अगर नक का दरबान होता तो उसकी जिन्दगी ताले म घडी घडी चाभी घुमाते कटती

खटखटाहट

खटखटाओ, खूब खटराटाओ। की
कृपा से आपका कोई नाम तो होगा
चोरी चोरी घने — कि महगाई
एसल अच्छी हु घट
डालकर घप बर। २ म
प्रभाव में वेभाव म

खटखट।

खटखटाओ खूब खटराट

तो मतनदल है जिसके एक मुह है मगर ज़बान दो हैं और जिसन एक दल के साथ दगा तो बहुत किया मगर दूसरे म मन्त्री न बन सका। श्राम्रो भाई पलटू ठीक है, जब दिल बदला तो दल बदला

खटखटाहट

खटखटाम्रो, खटखटाम्रो, खटखटाम्रो, कौन भाई कौन है ? यह कोई मिलावटी है जिसने असल म नक्ल की इतनी मिलावट की कि असल की पहचान उन बिसर गयी और यहा नक मे आ पहुचा। फिर खटखट ! कोई दम भी न ले ? अरे भाई, हो कौन ? यहाँ इतनी ठण्ड है कि कौरव का अग्निकुण्ड यहा हो नही सकता और मैं भी अब नरक का दरवान नही बनता। सोचा था, सब धन्धेबाजा के थोडे थोड नमून बुला लेंगे क्योकि सबकी उन्नति का माग यहीं को आता है

खटखटाहट

ठहरिए, ठहरिए, अभी आया। ज़रा दरवान का भी ख्याल रखिएगा, प्रभु !

फाटक खोलता है, मकडफ और लनाक्स आते हैं

मकडफ — कहो ब धु, क्या कल बडी रात गय उत्सव पूरा हुआ जो तुम इतनी देर सोते रह गये ?

दरवान — जी हा, हम भोर तक पीते पिलाते रहे और आप जानते ही है कि शराब म अवगुण तीन तीन हैं।

मकडफ — सो भला क्या हैं ?

दरवान — लीजिए सुनिए एक, आँखें लाल करे, दूसरे नीद लाय, तीसरे पेशाब लाय। लम्पटता, मालिक, वह बढाती भी है और घटाती भी है क्योकि वह काम तो जगाती है मगर काम लायक नही रखती। शराब की अति मानो लम्पट से दलबदल करती है— उसको बनाती है उसको मिटाती है, उसका चढाती है उसको गिराती है, उसको उकसाती है उसको दबाती है कहन का मतलब

अक 2 दृश्य 3

खटखटाहट की आवाज बढती जाती है। एक शराबी दरवान का प्रवेश

दरवान कोई शायद खटखटा रहा है। हा, खटखटा ही रहा है। कोई अगर नक का दरवान होता तो उसकी जिन्दगी ताले मे घडी घडी चाभी घुमात कटती

खटखटाहट

खटखटाओ, खूब खटखटाओ। अरे कौन है भाइ ? ईश्वर की कृपा स आपका कोई नाम तो होगा ! यह एक व्यापारी है जिसने चोरी चोरी चने भर लिये कि महगाई मे अपना घर भरे। मगर फसल अच्छी हुई और दाम घट गये और यह गले म फासी डालकर चल बसे। आओ भाई आवताव के भगत ! यहाँ तो अभाव मे वेभाव की पडेगी

खटखटाहट

खटखटाओ, खूब खटखटाओ। अरे भाई कौन है ? हे ईश्वर, यह

तो मतबदल है जिसके एक मुह है मगर जबान दो है और जिसने एक दल के साथ दगा तो बहुत किया मगर दूसरे मे मन्त्री न बन सका । आम्रो भाई पलटू, ठीक है, जब दिल बदला तो दल बदला

खटखटाहट

खटखटाओ, खटखटाओ, खटखटाओ, कौन भाई, कौन है ? यह कोई मिलावटी है जिसने असल मे नक्ल की इतनी मिलावट की कि असल की पहचान उसे बिसर गयी और यहा नर्क मे आ पहुचा। फिर खटखट ! कोई दम भी न ले ? अरे भाई, हो कौन ? यहा इतनी ठण्ड है कि रौरव का अग्निकुण्ड यहा हो नही सकता और मैं भी अब नरक का दरवान नही बनता । सोचा था, सब धन्धेबाजो के थोडे थोडे नमूने बुला लेंगे क्योकि सबकी उन्नति का मार्ग यही को आता है

खटखटाहट

ठहरिए, ठहरिए, अभी आया । जरा दरबान का भी ख्याल रखिएगा, प्रभु !

फाटक खोलता है, मक्डफ और लेनाक्स आते हैं

मकडफ कहो बन्धु, क्या कल बडी रात गये उत्सव पूरा हुआ जो तुम इतनी देर सोते रह गये ?

दरबान जी हा, हम भोर तक पीते पिलाते रहे और आप जानते ही है कि शराब म अवगुण तीन तीन हैं ।

मकडफ सो भला क्या हैं ?

दरबान लीजिए सुनिए एक, आखें लाल करे, दूसरे नीद लाये, तीसरे पेशाब लाये । *लम्पटता, मालिक, वह बढाती भी है और घटाती* भी है क्योकि वह काम तो जगाती है मगर काम लायक नही रखती । शराब की अति मानो लम्पट से दलबदल करती है— उसको बनाती है उसको मिटाती है, उसका चढाती है उसको गिराती है उसको उकसाती है उसको दबाती है कहने का मतलब

है कि उसे खडा करती है और बिठा देती है और फिर सोते म दगा देकर चारा खाने चित्त कर चल देती है

मकडफ मुझे दीखता है शराब ने तुझे भी कल चारा खाने चित्त कर दिया था

दरबान जी हाँ, जी हाँ, कल उसने तो मेरा गला ही पकड लिया पर मैं उससे तगडा पडा और हालाकि मेरे पाँव थोडी देर को लडखडा गये, आखिर मे मैंने उसे उलटकर दम लिया

मकडफ क्या तेरे स्वामी की सुबह हुई ?

मकवेथ का प्रवेश, रात के कपडे पहने है

जग गये वह, लो हमारी खटखटाहट से

लेनाक्स नमस्कार, राजपुत्र

मकवेथ दोनो को नमस्कार

मकडफ क्या नरेश जागे हैं ?

मकवेथ अभी नही

मकडफ मुझको बुलाया था और मुझे देर हुई

मकवेथ मैं उनके पास लिये चलता हू

मकडफ राजा का सत्कार सुखद कष्ट होगा
पर कष्ट तो फिर भी है

मकवेथ मन का आनद ही तो देह का कष्ट है
रास्ता इधर से है

मकडफ मैं स्वय जाता हूँ क्योकि आदिष्ट हूँ

भीतर जाता है

लेनाक्स प्रस्थान राजा का आज है ?

मकवेथ हाँ, ऐसा ही तय था

लेनाक्स रात कल भयकर थी
हम जहा सोये थे चिमनिया गिर पडी
वायु म विलाप और हत्या का चीत्कार सुन पडा
दुखभरे भविष्य मे अनिश्चय की उथलपुथल

और अराजकता की कर्कश चेतावनी
लम्बी पहाड सी रात भर
दिया किया उल्लू का अट्टहास
कुछ लोग कहते हैं
कि पृथ्वी उद्विग्न थी और कँपकँपाती थी

मकबथ — रात थी भयंकर कल

लेनाक्स — मेरे युवा मानस मे ऐसी किसी और रात की कोई स्मृति नही

मकडफ का प्रवेश

मकडफ — सर्वनाश, सर्वनाश ! क्या समझू ? क्या कहूँ ?

मकबथ, लेनाक्स — क्या हुआ ?

मकडफ — सर्वनाश खेल गया है अपना खेल अधमतम
हत्या ने पिंजरा तोडकर
राजा के प्राणो का पक्षी चुरा लिया

मकबथ — क्या कहा प्राणो का ?

लेनाक्स — राजा के ?

मकडफ — जाओ औ' स्वय अपनी आँखो को हतसन कर लो
दृश्य वह निहारकर
और तब स्वय कहो क्या देखा

मकबथ और लेनाक्स जाते हैं

जागो, जागो जागो
तुमुलनाद करके जगाओ
हत्या, हत्या,
बाको डोनालबेन, मैलकम, जागो
मृत्यु की अनुकृति निद्रा त्यागो
साक्षात मृत्यु को देखो

उठो उठो, जैसे कब्र से कोई उठे और
आओ जैसे कि कोई प्रेत चलता हो

घण्टे बजते हैं मैकबेथ पत्नी का प्रवेश, रात क
कपडे पहने है

पत्नी   क्या कारण है कि ये कणकटु घण्टे
सोतो को उठाकर बुला रहे हैं
बोलो, बोलो

मैकडफ   कल्याणी,
मैं जो कहूँगा वह, सुनने के योग्य नही आपके
नारी के कानो म शब्द वे मर्मातक होवेंगे

बाको साथ कपड पहने आता है

बाको, बाको, महाराज मारे गय

पत्नी   हाय, हमारे घर मे ?

बांको   घर म किसी के हो, महा दुष्कृत्य है
मैकडफ
वह दो जो तुमने अभी कहा, वह सच नही था

मकबेथ   वह देखने के यदि थोडी देर पहले ही
मैं मर गया होता तो सुख स रहता
क्योकि इस क्षण से अब
जीवन मे कुछ रह नही गया
सबकुछ खिलवाड है
शील नही रह गया, रही न शालीनता

मलकम और डोनालबेन दायें दरवाज से तेजी से
आते हैं

डोनालबन   क्या कुछ अनिष्ट है ?

मकबथ   हाँ, औ तुम्हारा ही और तुमको पता नही

रक्त के प्रवाह का उद्गम, आगम, निर्झर
उत्स, हो गया है आज कुण्ठित तुम्हारा

मक्डफ तुम्हारे पिता मारे गये

मलक्म है ! किसके हाथों

लेनाक्स दिखता है, उनके कक्ष के पहरेदारों का काम था
हाथ मुंह उनके रक्तरंजित थे
उनकी कटारें भी
और वे वैसी ही खून सनी
उनकी तकिया पर थीं
आँखें उन्मत्त एकटक घूरती सी थीं
उनके हाथों बँस रहता सुरक्षित
तब प्राणधन किसी का

मक्बेथ हां, फिर भी क्रोध का मुझको है पश्चात्ताप
जो मैंने उनका वध कर डाला

मैकडफ किसलिए ? क्या किया ?

मकबेथ कौन हो सकता है एक क्षण एक साथ
चकित और सहज
क्षुब्ध और शांत स्वामिभक्त और निर्विकार ?
कोई मनुष्य नहीं
मेरा अबाध प्रेम
तोड़ तर्क की बाधा वह निकला
यहाँ पड़ा था डंकन
रजतवर्ण तन पर चित्रित था स्वर्णिम शोणित
और खुले घाव मानो काल के प्रवेश को
कपाट थे खुले हुए
वहाँ, हत्यारे थे
अपने दुष्कृत्य से सराबोर
उनके छुरे रक्त से तर थे मूठ तक
कौन थमा रहता तब जिसमें भक्ति होती
और उसकी अभिव्यक्ति का साहस भी होता

पत्नी ओह, मुझे ले जाओ

मक्डफ इनको सम्हालो

मलक्म डोनालबेन से

हम चुप क्यों चारे हैं ?
इससे सब मानेंगे कि हम इनसे सहमत हैं

डोनालबेन मलक्म स

हम यहाँ अभी कुछ कह भी नही सकते
जाने किस विवर से निकलकर हमारा काल
कब हमें डस ले
दूर कहीं चले जायें
अभी नहीं उमडेंगे आँसू हमारे

मलक्म शोक अभी नहीं पिघलेगा

सेविकाएँ आती हैं

बाको मकवथ पत्नी क लिए
इनको सम्हालो

सेविकाएँ मकवथ पत्नी को ले जाती हैं

ओ जब हम ढाँक लें अपनी नगी सूरत
जो उघरे होने स दुख पाती है मिलें
और इस जघन्य कृत्य का विश्लेषण करें
ताकि और जान सकें
शका और भय स हैं व्याकुल हम
ईश्वर की छाया मे खडा हुआ हूँ मैं
षडयन्त्र के
विश्वासघाती घृणा के विरुद्ध हूँ

मकडफ मैं भी हूँ

सब हम सब हैं

मकवथ हम तुरन्त आयें पुरुषोचित अवस्था मे
ओ फिर एकत्र हों

सब ठीक है

मलक्म और डोनालबन को छोड सब भीतर जाते हैं

मलकम तुम क्या करोगे अब ?
हम उनकी सगत से दूर रहे
वृथा शोक झूठो को सुगम है, उनको हो
मैं पश्चिम जाता हू

डोनालबेन और मैं पूव को
अलग अलग हम दोनो और अधिक सुरक्षित है
आज हम जहाँ है वहाँ चाकू छिपा है मुस्कान मे
जितना नजदीक खून है जिसका वह उतना खूनी है

मलकम हत्या का अस्त्र जो कि छूटा है
अभी अपने ठौर पर नही पहुचा
और हमे उसके
निशाने से बचना ही इष्ट है
इसलिए अश्व लो
और विदा के क्षण मे मत बिलमो
द्रुत जाओ
दुलभ हो दया तो पलायन ही धम है

प्रस्थान

[कुछ सप्ताह बीत जाते हैं]

तीसरा अंक

अक 3 दृश्य 1

फोरेस क महल का एक सम्मेलन कक्ष बांको का प्रवेश

बांको तुमने सब पा लिया ग्लेमिस, काडर, नरेश
जैसा तुमसे विचित्र बहनें कह गयी थी
और मुझे शक है कि तुमने यह
छल से हथियाया है
फिर भी तुम्हारी वशवद्धि नही होगी
ऐसा ही कहा था
बल्कि मैं होऊगा
अगणित राजाओ का प्रजापति
यदि वे सच कहती हैं
जैसा मैक्बेथ, प्रकटा तेरे प्रसग मे
तो तेरे ही समान
मुझको भी क्या नही
फलदायक सिद्ध हो
मुझम आशा जगायें
लेकिन बस, ठहर जाओ

दुन्दुभिवादन, मकबथ का राजा और पत्नी का रानी के रूप मे प्रवेश। साथ मे सेनापति, रोस आदि कई सामन्त और अनुचर हैं

मकबथ यह रहे हमारे मुख्य अतिथि

पत्नी हम इन्हे भूल सकते हैं क्या ?

मकबथ है आज रात को महाभोज का आयोजन
कामना करेंगे हम आपकी उपस्थिति की

बांको आदेश करें, कर्तव्य करूँ

मकबथ क्या आज आपको यात्रा पर भी जाना है ?

बांको जी, महामान्य

मकबथ अच्छा होता यदि परामर्श हम कर सकते गम्भीर आज
पर कल होगा
यात्रा कितनी लम्बी होगी ?

बांको बस, उतनी जितनी अब से लेकर ब्यालू तक
हो सकती है
हां घोडे यदि थक गये
घडी दो घडी देर हो जायेगी

मकबेथ भूलना नही रात का भोज
सुनता हूँ डंकन के बेटे करते विदेश मे कुप्रचार
स्वीकार नही करते हैं अपना पितृघात
पर यह सब कल
जब राजकाज के प्रश्नो पर हम सोचेंगे
तो विदा रात तक
साथ जा रहा है फ्लियास ?

बांको जी, महामान्य
अब देर हो रही है हमको

मकबेथ भगवान करे घोडे फुर्तीले और चुस्त साबित हो
अच्छा, हो सवार लो विदा

बांको जाता है

मकवथ प्रत्येक का समय अपना है शाम के सात तक
तदनन्तर
संगति का लाभ सुखदतर हो
इसलिए इष्ट एकान्त हमें

सबसे

प्रभु कृपा करें

सब जाते हैं। मकवथ और एक सेवक रह जाते हैं

मकवथ *सेवक से*
क्या वे जन प्रस्तुत हैं?
सेवक महाराज, वे दोनों ठहरे हैं द्वार पर
मकवथ ले आओ सामने

सेवक का प्रस्थान

राजा कहलाने से क्या
राजा होकर सुरक्षित रहना ही श्रेयस्कर है
बाको के प्रति मुझे गहरा सन्देह है
और उसके राजसी स्वभाव में कुछ है
जिसका भय है
दुस्साहसी है वह, संकल्पवान है
सावधान भी है औ' वीर भी
एक वही है जिसके होने से मैं सचमुच डरता हूँ
आत्मा जिसके सम्मुख कुण्ठित हो जाती है
उसने डाइनों को फटकारा था
जब राजा कहकर उन्होंने
प्रथम बार मुझको पुकारा था
और उसने पूछा था अपना अनागत
तब डाइनें
द्रष्टा भविष्य की हो जैसे, बोली थीं

'तुमसे निवृत होगा नृपनिधन
यदि मेरा राजमुकुट केवल इसलिए है
कि मेरे पुत्र से छीन लिया जाय
तो क्या मैंने अपने मन को पापिष्ठ किया
बाको संतति के हित ?
उनके हित क्षमाशील डंकन का वध किया ?
उपजाया वैमनस्य अन्तर में केवल उनके लिए ?
बाको के पुत्र के सिंहासन के लिए
मैंने अपनी आत्मा दे दी शैतान को ?
ऐसा है तो मेरे भाग्य आ
तुझसे भी दो दो हाथ कर लूं मैं
कौन है ?

सेवक दो हत्यारों को लेकर आता है

अब जाओ द्वार पर,
वहीं रहो जब तक हम न बुलायें

सेवक का प्रस्थान

क्या कल ही तुमसे बात हुई थी ?

हत्यारा *1* हां, प्रभुवर, हुई थी ।

मकबेथ तो क्या तुमने मेरे शब्दों पर मनन किया ?
क्या तुमने माना
कि दुर्दिन का कारण तुम्हारे, अतीत में
बाको था, मैं नहीं, जैसा तुम समझे थे ?
मैं तो निर्दोष था
यही मैंने कहा था उस पिछली भेंट में सप्रमाण
कैसे तुम छले गये, कैसे सताये गये
किसने षडयन्त्र रचा ऐसे
कि अल्पबुद्धि भी कोई कह उठता
यह बाको ने किया

हत्यारा 1 आपने बताया था

मकबथ निश्चय ही, और भी कहा था कुछ
और आज भेंट का वह ही उद्देश्य है
क्या तुम इतने बड़े धीरज के धनी हो
कि जो हुआ है उसको जाने दो
इतने धर्मात्मा कि ऐसे श्रीमान
और उसकी संतान की कल्याणेच्छा करो
जिसके अन्याय ने
दुर्गति तुम्हारी की
निधन तुमको किया ?

हत्यारा-1 महामान्य, हम भी मनुष्य हैं

मकबथ हां, मनुष्य जाति में गिनती तुम्हारी है
जैसे कि श्वान, शुनक, आखेटक, कूकुर औ' मृगदंशक
कुत्तों की सूची में सभी लिखे होते है
पर कोई चतुर है शिकारी है कोई
रखवाला है कोई औ कोई है स्वामिभक्त
उनके गुणानुसार गृहस्वामी उन्हें
अलग अलग काम देता है
वैसे ही नर भी है
तब यदि नरपंक्ति में महत्त्व कुछ तुम्हारा हो
तो बोलो
और मैं तुम्हें एक काम ऐसा सौंपूंगा
जिससे तुम्हारा शत्रु क्षय होगा
तुम मेरे प्रिय होगे

हत्यारा 2 मैं, प्रभुवर, दुनिया के दुख इतने सह चुका
इतने थपड़े मैं खा चुका हूं कि मैं
कुछ भी कर गुजरूंगा दुनिया से बदला चुकाने को

हत्यारा 1 मैं भी दुर्भाग्य का मारा थकाहारा हूँ
मुझको तो चाहिए कोई भी रास्ता,
या बिगड़ी बन जाय
या फिर निस्तार मिले जीवन जंजाल से

'तुमसे निसृत होगा नृपतिवंश'
यदि मेरा राजमुकुट केवल इसलिए है
कि मेरे पुत्रों से छीन लिया जाये
तो क्या मैंने अपने मन को पापिष्ठ किया
बांको संतति के हित ?
उनके हित क्षमाशील डंकन का वध किया ?
उपजाया वैमनस्य अंतर में केवल उनके लिए ?
बांको के पुत्रों के सिंहासन के लिए
मैंने अपनी आत्मा दे दी शैतान को ?
ऐसा है तो मेरे भाग्य आ,
तुझसे भी दो दो हाथ कर लूं मैं
कौन है ?

सेवक दो हत्यारों को लेकर आता है

अब जाओ द्वार पर,
वहीं रहो जब तक हम न बुलायें

सेवक का प्रस्थान

क्या कल ही तुमसे बात हुई थी ?

हत्यारा-1 हाँ, प्रभुवर, हुई थी।

मैकबेथ तो क्या तुमने मेरे शब्दों पर मनन किया ?
क्या तुमने माना
कि दुर्दिन का कारण तुम्हारे, अतीत में
बांको था, मैं नहीं, जैसा तुम समझे थे ?
मैं तो निर्दोष था
यही मैंने कहा था उस पिछली भेंट में सप्रमाण
कैसे तुम छले गये, कैसे सताये गये
किसने षड्यन्त्र रचा ऐसे
कि अल्पबुद्धि भी कोई कह उठता
'यह बांको ने किया'

हत्यारा-1 आपने बताया था

मकबेथ निश्चय ही, और भी कहा था कुछ
और आज भेंट का वह ही उद्देश्य है
क्या तुम इतने बड़े धीरज के धनी हो
कि जो हुआ है उसको जाने दो
इतने धर्मात्मा कि ऐसे श्रीमान
और उसकी सन्तान की कल्याणेच्छा करो
जिसके अन्याय ने
दुर्गति तुम्हारी की
निधन तुमको किया ?

हत्यारा-1 महामान्य, हम भी मनुष्य हैं

मकबेथ हां, मनुष्य जाति में गिनती तुम्हारी है
जैसे कि श्वान, शुनक, आखेटक कूकुर औ' मृगदशक
कुत्तों की सूची में सभी लिखे होते हैं
पर कोई चतुर है, शिकारी है कोई
रखवाला है कोई औ कोई है स्वामिभक्त
उनके गुणानुसार गृहस्वामी उन्हें
अलग अलग काम देता है
वैसे ही नर भी हैं
तब यदि नरपंक्ति में महत्त्व कुछ तुम्हारा हो
तो बोलो
और मैं तुम्हें एक काम ऐसा सौंपूंगा
जिससे तुम्हारा शत्रु क्षय होगा
तुम मेरे प्रिय होगे

हत्यारा 2 मैं, प्रभुवर, दुनिया के दुख इतने सह चुका
इतने थपेड़े मैं खा चुका हूँ कि मैं
कुछ भी कर गुजरूँगा दुनिया से बदला चुकाने को

हत्यारा 1 मैं भी दुर्भाग्य का मारा थकाहारा हूँ
मुझको तो चाहिए कोई भी रास्ता,
या बिगड़ी बन जाये
या फिर निस्तार मिले जीवन जंजाल से

ग्रक 3 दृश्य 2

मक्वथ पत्नी और एक सेवक का प्रवेश

पत्नी बाको सभा से गया ?
सेवक हाँ, महिषी, रात फिर आयेगा
पत्नी राजा से कहो जब उनको अवकाश हो,
कुछ क्षण मुझे देंगे
सेवक ऐसा ही कहता हूँ
पत्नी सब दिया और कुछ नही मिला,
वासना मिटी पर शान्ति नही पायी हमने
तोडे से क्या आनन्द मिला
इससे तो अच्छा था कि स्वय टूटे होते

विचारमग्न मक्वथ का प्रवेश

ऐसी क्या बात है स्वामी अकेले आप रहते हैं
संगिनी कोई यदि है तो मलीनता
उपजी उन भावो से जिनको मर जाना था
उनके सग सग जिनके बारे मे वे हैं
जिसका उपाय नही, उस पर विचार क्यो
जो हुआ सो हुआ

मकरध्वज कुचला है साँप को, नहीं मारा
यह फन उठायेगा
डरता है पापी मन उसके विपत्न्त से
सब कुछ ढह जाय
औ त्राहि त्राहि मच जाये लोक परलोक में
मुझको स्वीकार है
डरे डरे क्या खायें हम
सोयें तो सपने आयें भयंकर
औ' हमको झकझोर दें ?
जिन्ह निजी शान्ति के हित हमने शान्त किया
शान्त क्यों नहीं हो गये उनके संग हम ?
क्या असहाय छटपटाते हैं ?
डंकन इस जीवन का विषमज्वर झेलकर
मीठी नींद सोया है
राजद्रोह ने उसका काम या तमाम किया
अस्त्र शस्त्र, विष, अथवा वैर अथवा आक्रमण
अब उसका और कुछ बिगाड नहीं सकते है
पत्नी सम्हलो सम्हलो, स्वामी
रूखा रूखा चेहरा अपना सँवार लो
हँसमुख दिखलायी दो
अपने अतिथियों के बीच आज
मकरध्वज ऐसा ही करूँगा मैं, प्रियतमे,
तुम भी यही करना
बाको की ओर कुछ विशेष दत्तचित्त हो
बोली से आँखो से उसको आदर देना
हम अभी अरक्षित हैं इसलिए मुखौटे से
अन्तर के सत्य को ढाके रहना होगा
पत्नी ये बातें छोड दो
मकरध्वज हा, मेरे मन को सौ बिच्छू डस रहे
बाको औ' उसका फिलयास अभी जीवित है
यह तुम जानती होगी ?
पत्नी पर उनके जीवन का पट्टा तो नहीं लिखा

मकवेथ यही सन्तोष है, वे भी तो बध्य हैं
तब तू प्रसन्न हो
इसके पहले कि पेड पर लटका चिमगादड
उड निकले रात की खबर देने
भीषणतम कृत्य एक होवेगा

पत्नी सो क्या है ?

मकवथ तू मेरी लाडली, उससे अनजान रह
हाँ, तू जब जानेगी आनन्दित होवेगी
आ, अधी रात दिवस की मलीन आँखो पर
आ, पट्टी बाँध दे
जिस जीवनसूत्र के अटूट बने रहने से
मेरा मन त्रस्त है
आ अपने शोणित-प्यास अदृश्य हाथो से
वह धागा तोड दे
कुहरा गहराता है
कौवा बसेरे की खोज म जाता है
दिन के अम्लान कुसुम सहसा कुम्हलाते हैं
निशिचर अब हेरेंगे अपने अपने शिकार
विस्मय मत कर मेरे शब्दो पर, धीरज धर
पाप किये से ही मिलते हैं फल पाप के
आ मेरे सग आ ।

प्रस्थान

अक 3 दृश्य 3

जगल की एक पगडण्डी जो उस राजकीय उपवन
के द्वार तक जाती है जो महल से कुछ दूर है।
दोनों हत्यारे आते है, पीछे एक तीसरा है

हत्यारा 1 तुझे किसने भेजा है ?
हत्यारा-3 मैकवेथ ने
हत्यारा 2 अविश्वास मत कर कि यह हमे बताता है
हमको क्या करना है
वैसे ही जसे निर्देश था
हत्यारा 1 तब तू भी साथ आ
पश्चिम मे झिलमिल है आभा सूर्यास्त की
पथ मे विलमा यात्री आतुर हो उठता है
जल्दी आये पडाव
और पास आता है हम लोगो का शिकार
हत्यारा 3 सुन—घोडे की टाप
बाको दूर से
रोशनी दिखाओ रे

बरनम वन

हत्यारा 2 वही है—
बाकी आमंत्रित दरबार में पहुंच चुके

हत्यारा 1 उसके घोड़े गये

हत्यारा 3 एक मील के लगभग जायेंगे
पर वह औरों जैसा
राजद्वार तक पैदल जाता है

बांको और फ्लियांस का मशाल लिये हुए प्रवेश

हत्यारा-2 वह देखो रोशनी

हत्यारा 3 वही है—

हत्यारा 1 होशियार

बांको आज रात बरसेगा

हत्यारा 1 तो बरसे

पहला हत्यारा मशाल बुझा देता है और दूसरा बांको पर हमला करता है

बांको हाय, विश्वासघात,
भागो बेटा फ्लियांस, भागो भागो भागो
मेरा बदला लेना—हाय, नीच

मरता है फ्लियांस भागता है

हत्यारा 3 किसने मशाल गुल की ?

हत्यारा-1 क्या—नहीं करनी थी ?

हत्यारा 3 सिर्फ एक खत्म हुआ और पुत्र बच निकला

हत्यारा 2 आधे से अधिक काम रह गया

हत्यारा 1 खैर चलें जो किया है उसकी खबर दें

प्रस्थान

अक 3 दश्य 4

महल का बडा कमरा । पीछे की ओर एक चबूतरे पर जिसक दायें बायें दो दरवाज हैं दो सिंहासन तथा सामने की ओर वडी मेज और वठने क आसन । भोज सजा हुआ है । मक्वथ, पत्नी, रोस लनाक्स और अन्य सामन्त और अनुचर साथ साथ आत हैं

मक्वथ आइए विराजिए, अपन अनुक्रम के अनुसार पत्ति म
आदि से अन्त तक सबका हार्दिक स्वागत

सामन्त महामान्य, धन्यवाद

पत्नी को मकबथ चबूतरे पर ल जाता है सामन्त बडी मेज क दोनों ओर वठत हैं । सिरे पर एक आसन खाली छोड दत है

मक्वथ मिले जुलेंगे सबसे आज हम
आतिथेय जो ठहरे

पत्नी सिंहासन पर वठती है

मकबथ	सिंहासन पर शोभित है देवी
समय गये उनकी भी सगति की प्राथना करेंगे हम

पत्नी	मेरी ओर से कृपया
मित्रो को जतला दें मेरे मन का उछाह
सबका सुस्वागतम्

मक्बथ जब बायें दरवाज क पास से गुज़रता है तो हत्यारा 1 वहाँ प्रकट होता है। सामन्त उठकर मैंकबेथ पत्नी का अभिवादन करत है

मैंकबथ	देखो, वे उत्तर मे धयवाद करते हैं
पक्ष दो बराबर हैं
मैं यहाँ मध्य मे बैठूगा
खुलकर आनन्द करो, चलने दो एक दौर

द्वार पर जाता है

मकबथ	तेरे चेहरे पर खून है
हत्यारा	तो वह बाको का है
मकबथ	बेहतर है वह तेरे तन पर है उसके तन मे नही
क्या उमे ठिकाने पहुचा दिया ?
हत्यारा	उसकी गरदन प्रभुवर, चाक है
मैंने ही की
मक्बेथ	तू गरदनमारो मे वीर है
पर जिसन वध किया फ्लियास का
वह भी इक वीर है
यदि तूने ही किया तो तू है परमवीर
हत्यारा	महामहिम फ्लियास बच निकला
मकबथ	पुन प्रबल होता है तब मेरा सन्ताप
अब तक मैं शीतल था, दढ था चट्टान सा
पूण था

मुक्त और निर्बन्ध था मैं गभीर सा
पर भय मैं घिर गया कोटर म बन्द हुआ
कील दिया मुझको दुश्चिन्ता न
वाको तो ठीक है ?

हत्यारा वाको सुरक्षित है खाई म पडा हुआ
सर पर हैं बीस घाव
उनम स हर कोई काफी है

मक्बथ धन्यवाद
साँप मरा, बच निकला साँप का सँपोला जो
उसम अवसर पाकर होगा विष का विकास
दन्तहीन आज है
जा तू, कल अपन फिर सुनेंगे, जा

पत्नी ह राजन, आप क्यो रुक गय, पीजिए
भोज प्रीतिभोज नही बाजारू खाना है
यदि उसम प्रीति बार बार प्रकट हो नही
उदरभरण है केवल, वह तो ज्योनार नहीं
और अपने अपन घर पर भी हो सकता है
आप मौन मत रहिए
अपन अतिथियो का करिए मनोरजन

वाको का प्रत आकर मक्बथ के लिए निदिष्ट स्थान पर बठता है

मक्बथ मधुरे, यह भली याद दिलवायी

अतिथियों से

जीमिए महानुभाव
इच्छा हो, रुचि हो जठराग्नि हो एव आरोग्य हो !

लेनाक्स महामहिम, आसन ग्रहण करें

मक्बेथ आज यहाँ राज्य का सुसज्जित गौरव होता -
यदि आया होता हमारा सौम्य बाको

ग्राको का न ग्राना मैं वजनीय ग्रवहेला मानूगा
क्षम्य दैवयाग नहीं

रोस उसकी ग्रनुपस्थिति, प्रभु वचनभग है उसका
ग्राप कृपा कर हमको ग्रपन सत्सग म सम्मानित कीजिए

मक्वथ पगत तो पूरी है

लेनाक्स यहा एक ग्रासन रख छोडा गया है, प्रभु

मकवथ कहा ?

लेनाक्स यहा राजेश्वर
महामहिम, क्या विचलित हाते है ?

मक्बथ यह—तुममे से किसकी करतूत है ?

ग्रतिथि क्या ? महामहिम ?

मकबथ तू क्या कह सकता है ? कुछ नही किया मेरे हाथो ने
मत ये लोहूलुहान केश हिलाकर निहार

पत्नी खडी हो जाती है

रोस भद्रलोक, उठिए राजेश्वर ग्रस्वस्थ हैं

पत्नी *सिहासन स उतरकर आती हुई*
बैठिए न, सज्जनो
ऐसा स्वामी को जब तब होता रहता है
ग्रौर युवावस्था से ही होता ग्राया है
सुनिए, बैठे रहिए
क्षण भर म वह फिर पहले से हो जायेंगे
ग्राप उधर ध्यान न दें
ग्रधिक देखन मे वह ग्रौर ग्रस्तव्यस्त होगे
ग्रौर ग्रधिक उत्तेजित
जीमिए, उन्ह छाड दीजिए
क्या तू मद है ?

मकबथ हाँ, ग्रौ' निर्भीक मद
जिसकी ग्राँखो म
वह दृश्य सहन करने का
साहस है
जो कि स्वय शैतान देख नही सकता है

पत्नी मायावी इन्द्रजाल—
यह तेरी कातरता का ही प्रतिबिम्ब है
यह वही छुरी है जो तूने तब टँगी हुई देखी थी निरवलम्ब
औ' तूने कहा था कि डंकन की ओर तुझे ले गयी
चौंक चौंक उठना यों
जैसे सचमुच भय हो
सुने सुनाये किस्से कहती औरतों को सुहाता है
तुझे नहीं
शर्म खा, क्या ऐसे चेहरे बनाता है ?
देख शांत हो करके
तू खाली आसन को घूरता खड़ा है

मकबथ देख देख, वहां देख, इधर ताक, तू यह क्या कहती है ?
मैं क्या डरने लगा
जब कि तू न हिलता है और न ही बोलता
यदि कब्रों औ समाधियों में रक्खे मुर्दे उठ उठ लौटने लगे
तो हमको गिद्ध पालने होंगे
औ' उनकी विष्ठा ही हमारा स्मारक होगी

प्रेत लोप हो जाता है

पत्नी तू पौरुष खो बैठा है अपनी मति खोकर
मकबथ मैं यहां खड़ा हूं तो मैंने देखा भी है
पत्नी शर्म खा
मकबथ रक्तपात होता रहा है अतीत में
जब कि नियमबद्ध नहीं था शांतिप्रिय समाज
पीछे भी हत्याएँ हुई हैं कि जो कही नहीं जातीं
किंतु यही होता था कि शिरोच्छेद होने पर
मर जाता था मनुष्य, लोप हो जाता था
किंतु आज, आज वह पुनः उठकर आता है
खाड़े के बीस घाव शीश पर लिये हुए
और हमें आसन पर बैठने नहीं देता
यह हत्या से भी भयावह है

बरनम

पत्नी मक्बेथ की बाह छूकर
राजेश्वर, बन्धु बाट जोह रहे
मक्वथ भूल गया था मैं यह
मेरे सज्जन मित्रो, चिंतित मत होइए
मेरा विचित्र एक रोग है
जो मेरे परिचित हैं वे जानते ही हैं
आइए, प्रीति हो, चिरायु हो
प्याला दो भरकर दो
फिर मैं भी बैठूगा

जब प्याला उठाता है तो प्रेत मक्बेथ के पीछे के आसन पर फिर प्रकट होता है

आप जो उपस्थित हैं, उनको शुभकामना
औ' प्यारे बाको को भी जो है नही
होता तो कितना अच्छा होता
सबको शुभकामना
अतिथि हम प्रतिबद्ध है अर्पित है

मकवथ अपने आसन पर आना चाहता है

मैक्बेथ हट जा, नजरो से ओझल हो जा
धरती म समा जा
तेरी हड्डियो मे गूदा नही
तेरा खून ठण्डा है
इन आँखो मे जिनसे बाधे है टकटकी
कोई प्रतीति नही
पत्नी यह इनकी आदत है और कुछ नही समझें सज्जनो
हा, मजा किरकिरा तो कर ही देती है
मक्वथ जो मनुष्य के बस का है वह कर सकता हूँ
आ तू धर सिंह रूप गैण्डा बन शूकर बन
भाइ सा रूप धार यह चोला छोडकर

फिर मेरी दृढता का जाच ले
या फिर जीवित हो जा और खडग लेकर आ
तब यदि कापू ठिठकू तो कह मुझको कायर
हट जा, भयकारी छाया, मायाधर मिथ्या, दूर हो

प्रत लाप हो जाता है

लो, उसके जाते ही मैं फिर से स्वस्थ हुआ

पत्नी — तूने तो रगमग कर दिया, सभा व्यथ कर डाली
अद्भुत अस्थिरता से

मकबथ — क्या ऐसी होती हैं वस्तुएँ ?
औ एकाएक बदली सी घिर आ सकती हैं ?
तू तो मुझमे विचित्र अनुभव उपजाती है
मैं अपने से ही अनजान हुआ जाता हूँ
जब कि दखता हू मैं
तू एसे दृश्य देखकर भी अस्थिर नहीं
तेरे गालो की लालिमा उतर नहीं जाती
जब कि मैं सफेद हुआ जाता हू

रोस — कौन दृश्य महामान्य ?

पत्नी — विनती है कुछ न कह
और बिगडती जाती है इनकी दशा प्रश्न पूछे से
क्रोधित हो उठते है
अच्छा, अब नमस्कार
जाने म अपने अनुक्रम को भूल जायँ
तुरत जायँ

लेनाक्स — नमस्कार, क्षेम हो, महाराज स्वस्थ हो

पत्नी — सबको शुभकामना

जात हैं

मकबेथ — खून मांगता है खून औ' लेकर रहगा खून
प्रकृति म सबकुछ सम्बद्ध है

पत्थर हिल उठते हैं, वृक्ष बोल पड़ते हैं
औ' हत्या संसृति में छिपी नहीं रहती है
अब कितनी रात गयी ?

पत्नी पौ फटनेवाली है
रात और दिन में संघर्ष है

मैकबेथ क्यों, तू क्या कहती है ?
मेरे बुलवाने पर क्या नहीं मैकडफ
आने को राज़ी है ?

पत्नी क्या बुलवा भेजा है ?

मैकबेथ अभी नहीं, पर मैंने सुना है
कि वह ऐसा कहता है
अब बुलवा भेजूँगा
उसके घर में मैंने रख छोड़ा है अपना भेदिया
कल जाऊँगा डाइन बहनों से मिलने को
उन्हें बोलना होगा आगे की बात, क्योंकि
मैं तुल गया हूँ अब बुरे से बुरे ढंग से
वह जानने को जो बुरे में बुरा हो
मेरे हित पहले हैं बाकी सब गौण हैं
लोहू में डूब चुका हूँ इतना
परना न चाहूँ तो लौटना जटिल है
जस आगे जाना
मेरे मन में कितनी अनजानी बातें उठ आयी हैं
पहले उनको करूँ
पीछे पहचानूँगा क्या किया

पत्नी तू आत्मा के सुख का, निद्रा का भूखा है

मैकबेथ आ, हम चलकर सोयें
मेरी यह घबराहट शुरू शुरू के भय के कारण है
यह अति अभ्यास से सहज होगी
कम बहुत कम किये हैं हमने तो अब तक

प्रस्थान

ग्रंक 3 दृश्य 5

लेनाक्स और अन्य एक सामन्त का प्रवेश

लेनाक्स घटनाक्रम कितना विचित्र है—
डंकन को मैकबेथ पर स्नेह था
लो, वह मारा गया,
बाकी ग्रँधेरे म निकला
तो ग्राप कह सकते हैं
उसको पिलयास ने खत्म किया
क्योंकि वह, पिलयास भी, फरार है
देखा ! ग्रँधेरे म चलने का नुकसान !
मैलकम, डोनालबेन का ग्रपने बाप को
मार डालना कितनी बुरी बात है बोलो
मैकबेथ का कितना ग्राघात लगा
उसने तभी तो शराब के गुलाम रक्षका का
वध कर डाला
कितना ग्रच्छा किया
ग्रौर ठीक ही तो है
जब वे कुकम को ग्रपने नकारते

तो सुनकर सज्जनगण कितने क्रोधित होते
मेरा तो कहना है मैकबेथ
राजकाज करता है भलीभाँति
डकनसुत यदि उसके कब्जे म होते
—औ' प्रभु की अनुकम्पा है कि वे कही और हैं—
पितृघात का फल दाना चखने को पाते
हे ईश्वर, झूठी कनवतियो
औ' अत्याचारी के घर भोज मे न जाने मे
मैकडफ बना है पात्र राजा के कोप का
आप कह सकते हैं कि वह कहाँ छिपा होगा ?

सामन्त डकनसुत, जिनका अधिकार लिये बैठा है अन्यायी
दूर देश म हैं औ मैकडफ भी वही गया
अन्य शक्तियो का सग्रह करने जिनके सम्बल से
फिर एक बार हम रोटी तोड सकें शाति से
राता को सो सकें
भोजो, जेवनारो को खूनसने छूरो से मुक्त करें
निश्छल सम्मान निष्कपट पायें
आज इन्ही को हम तरसते हैं ।
मकबेथ यह जानकर इतना विक्षुब्ध है कि
लडने की तैयारी करता है

लेनाक्स क्या उसने मैकडफ को घर से बुलवाया था ?

सामन्त मकडफ के पास जब राजा का चर पहुचा
उसने उत्तर दिया कि मैं नही आने का

लेनाक्स मैकडफ, तू दूर रह कि यही बुद्धिमानी है
कोई करुणा करके जा उसको समझाये
ताकि पाप से पंकिल हाथो की करनी से
दुखियारा देश यह हमारा स्वाधीन हो

सामन्त मैं उसको अपनी शुभकामना पठाता हूँ

प्रस्थान

चौथा अंक

अंक 4 दृश्य 1

तीनों डाइनें मंत्रोच्चार कर रही हैं

डाइनें क्षीतीज के बीच, बीचोबीच आख मीच
तू भूत हो फूत्कार स्फीत भीत चीत्कार क्लीश गुम्फित हो
मुण्डन डप
गुंजन भन भन दुप
विल क्ल क्ला हीन
शान्ती धुप हा

मकबेथ अंधियाली रात में रहस्यमयी डाइनो
तुम क्या कर रही हो—?

डाइन ऐसा कुछ जिसका कुछ नाम नहीं

मकबेथ तुमको, तुम्हारी विद्या को चुनौती है चाहे जो विद्या हो
उत्तर दो
हहरात अंधड उन्मुक्त करो
टूट पड़ें वे देवस्थानों पर
खोले मुंह क्षुब्ध नीलसिंधु औ' जहाजों को लील जाय
पट जायें हरीभरी फसलें, तरु उखड़ जायें
दुर्ग अपने रखवालों के सर पर आ ढहे

विराट सौध औ' गोपुर के ललाट झुकें, आ लगें
अपनी नीव से
निसग के समस्त बीज लौटपौट जायें
सड जाय सृष्टि
तुम मुझको उत्तर दो मेरी जिज्ञासा का

डाइन-1 पूछ, पूछ

डाइन-2 बोल, बोल

डाइन-3 हम उत्तर देंवेंगे

डाइन 1 तू हमसे सुनना चाहेगा या प्रेतो से ?

मक्बेथ बुलवाओ, उनको भी देखू मैं

डाइन-1 सूअरनी नौ बच्चा की खाय
रक्त उसका कोई ले आय
मेद जो सूली पर से चुए
अग्नि मे दे, स्वाहा हो जाय

गरज पहला प्रत, शिरस्त्राणयुक्त मुण्ड जो मकबेथ का सा है, प्रकट होता है

मक्बेथ बतला, अनात शक्ति

डाइन 1 वह तेरे अतर की जाने है
सुन उसके शब्द और बोल मती

प्रत 1 मक्बेथ, मैंक्बेथ, मैंकडफ से बचो

मकबेथ तू जो भी है तूने मेरा भय पहचाना
चेताया, धयवाद, टुक ठहर

डाइन-1 नही नही, न रोक उसको
और देख, उससे भी प्रबल प्रेत !

गरज । एक रक्तरंजित शिशु का प्रवेश

प्रत-2 मक्बेथ, मैंक्बेथ, निदय बन, निभय बन
अविचल रह
हँस करके टाल दे अपन पर आक्रमण
क्योंकि तू नारी के जने किसी मानव के
हाथो मारा नही जायेगा

मकबेथ तब मकडफ, जी जितना चाहे जी
मुझको तेरा क्या डर
फिर भी मैं होनी से लिखवाकर ले लूगा
'तू नही रहेगा'
मैं पीले चेहरेवाले डर से यह पाऊँगा
'तू असत्य कहता है'
और कडकती बिजली म भी सो पाऊँगा

गरज तीसरा प्रेत, मुकुटधारी शिशु हाथ मे हरा
वृक्ष

मक्बेथ यह क्या है, दिखता है राजकुवर मुकुट धरे
सब डाइनें सुन, केवल बोल मती
प्रेत-3 बन कठोर, अभिमानी
भूल जा कि कोई चिढता है करता है आलोचना
होते षडयन्त्र हो, होने दे
जब तक उठकर बरनम वन आयेगा नही
डजिनन पवत पर
तब तक राजा मैकबेथ हार नही सकता है

लोप हो जाता है

मक्बेथ ऐसा होगा नही
जगल को कौन उठा सकता है?
तरू को आदेश कौन दे सकता है
कि भूमि मे पैठी जड अपनी छोड दे?
यह शुभ है समाचार
दबे रहो, कब्र मे पराजित विद्रोहियो,
प्रतीक्षा करते रहो,
बरनम के उठने की,
अभिमानी मैक्बेथ राज करे,
जीवन की, काल की, समाज की करे सेवा

पर मेरा मन व्याकुल और जानने को है
बोलो, क्या तुममे बताने की क्षमता है
कि बाको के पुत्र
कभी राज करेंगे भू पर ?

सब डाइन और जान मत मैक्बेथ

मक्बथ ठीक है, न बतलाओ
शापग्रस्त होग तुम
बतलाओ

डाइन 1 दिखलाओ

डाइन 2 दिखलाओ

डाइन 3 दिखलाओ

सब डाइनें दिखलाओ इसको, दुखन दो इसका दिल
छाया सी आओ औ' हो जाओ ओझिल

आठ राजाओं की छायाएँ एक क बाद एक आती है, अन्तिम क हाथ मे प्याला है और सबके अन्त मे वाको का प्रत आता है

डाइनें तू क्या अवाक है मैकवेथ
गाती बजाती हैं और चली जाती हैं

मक्बथ गयी ? कहाँ ? जाने दो,
रहने दो लिखी हुई कालपत्र पर यह मनहूस घडी
कौन है ? चले आओ ।

लेनाक्स का प्रवेश

लेनाक्स आना हो

मक्बथ क्या तुमने देखी थी डाइनें ?

लेनाक्स जी नहीं

मकबथ जायँ जिस पथ से वह दूषित हो
उनका विश्वास करे जो वह अभिशप्त हो
घोडो की टाप सुनी थी मैंने ? कौन था ?

पर मेरा मन व्याकुल और जानो
बोलो, क्या तुममे बताने की क्षम
कि बाको के पुत्र
कभी राज करेंगे भू पर ?

सब डाइनें और जान मत मैकबेथ

मैकबेथ ठीक है, न बतलाओ
शापग्रस्त होगे तुम
बतलाओ

डाइन 1 दिखलाओ

डाइन 2 दिखलाओ

डाइन-3 दिखलाओ

सब डाइनें दिखलाओ इसको, दुखने दो इसक
छाया सी आओ औ' हो जाओ औ

आठ राजाओं की छ
हैं अंतिम क हाथ म
बाको का प्रेत आता

डाइनें तू क्या अवाक् है मैकबेथ
गाती बजाती हैं और

मैकबेथ गयी ? कहां ? जाने दो,
रहने दो लिखी हुई कालपत्र पर यह
कौन है ? चले आओ ।

लेनाक्स का प्रवेश

लेनाक्स आज्ञा हो

मैकबेथ क्या तुमने देखी थी डाइनें ?

लेनाक्स जी नहीं

मैकबेथ जायें जिस पथ से वह दूषित हो
उनका विश्वास करे जो वह अभिशप्त
घोड़ो की टापें सुनी थी मैंने ? कौन

रोस मेरी अच्छी बहन
शांत हो
सज्जन है तेरा पति और मतिवान है
वक्त का उतारचढाव जानता है वह
और अधिक क्या कहूँ
आज समय ऐसा है कि हम देशद्रोही हैं
औ' हमे पता नही
कि भय के मारे यकीन अफवाहो पर हम कर लेते हैं
और जानते नही कि वह भय किसका भय है
सागर की उद्वेलित और उग्र लहरो पर
उतराते डोलते थपडे खाते हैं हम
मैं चलू
देर करूँगा नही, जल्दी ही आऊँगा
ज्वार उतर जायेगा, या फिर चढकर सबकुछ
पहले जैसा ही कर जायेगा
मेरी प्यारी बहन, शुभाशीष

मक्डफ पत्नी इसका पिता है और यह पितृहीन है

रोस जो मैं बिलमा रहा तो भारी भूल होगी
मेरे रोके न रुकेगे आसू, चित्त दुखेगा तेरा
मैं तुरत जाता हूँ

प्रस्थान

मकडफ-पत्नी बेटे, तेरा पिता नही रहा
अब क्या करेगा तू, कसे जियेगा ?

पुत्र जैसे चिडियाँ जीती हैं, माँ

मक्डफ पत्नी क्या ? कीडो मकोडा के आसरे

पुत्र जो भी मिल जाये उनकी ही तरह से

मकडफ-पत्नी मेरे बच्चे, डरना मत कभी
लासे से, जाल से

पुत्र मैं क्यो डरूँगा माँ ?
ये छोटी चिडियो के लिए नही होत हैं
चाहे जो कहो, मरा नहीं है मेरा पिता

अक 4 दृश्य 2

फाइफ, मक्डफ का दुग। मक्डफ-पत्नी अपने बच्चे और रोस के साथ आती है

मकडफ-पत्नी उसन क्या किया था कि देश छोडना पडा ?
रोस धीरज मत खो, बहन
मक्डफ पत्नी उसने तो खो दिया
पागलपन था उसका भागना
दोषी जो कम से नही है वह
दिखता है दोषी भय करने से
रोस हम क्या जानें कि वह विवेक था कि भय था
मकडफ पत्नी क्या ? विवेक ? पत्नी को छोडकर, बच्चो को छोडकर
जमाजथा घरदुआर असुरक्षित छोडकर पलायन विवेक है ?
प्यार नही था उसको
वात्सल्य हीन है
पिद्दी भी पलटकर वार करती है
जब उल्लू घोसले पर हमला करता है
भय ही सब कुछ था और प्रेम कुछ नहीं था ?
किसी भाति सगत नही जो पलायन था उसम कसा विवेक ?

रोस   मेरी अच्छी बहन
शान्त हो
सज्जन है तेरा पति और मतिवान है
वक्त का उतारचढाव जानता है वह
और अधिक क्या कहू
आज समय ऐसा है कि हम देशद्रोही हैं
औ' हमे पता नही
कि भय के मारे यकीन अफवाहो पर हम कर लेते हैं
और जानते नही कि वह भय किसका भय है
सागर की उद्वेलित और उग्र लहरा पर
उतराते डोलते थपडे खाते है हम
मैं चलू
देर करूँगा नही, जल्दी ही आऊँगा
ज्वार उतर जायेगा, या फिर चढकर सबकुछ
पहले जैसा ही कर जायेगा
मेरी प्यारी बहन, शुभाशीष

मकडफ पत्नी   इसका पिता है और यह पितृहीन है

रोस   जो मैं बिलमा रहा तो भारी भूल होगी
मेरे रोके न रुकेंगे आसू चित्त दुखेगा तेरा
मैं तुरन्त जाता हूँ

प्रस्थान

मकडफ-पत्नी   बेटे, तेरा पिता नही रहा
अब क्या करेगा तू, कैसे जियेगा ?

पुत्र   जसे चिडिया जीती हैं, माँ

मकडफ पत्नी   क्या ? कीडो मकोडा के आसरे

पुत्र   जो भी मिल जाये उनकी ही तरह से

मकडफ-पत्नी   मेरे बच्चे, डरना मत कभी
लासे से, जाल से

पुत्र   मैं क्यो डरूँगा, मा ?
ये छोटी चिडियो के लिए नही होते हैं
चाहे जो कहो, मरा नहीं है मेरा पिता

मैकडफ पत्नी	नही वह नही रहा कैसे बिना बाप के रहेगा तू
पुत्र	क्या मेरा पिता देशद्रोही था ?
मकडफ पत्नी	हा, वह था
पुत्र	कौन देशद्रोही कहलाता है ?
मकडफ पत्नी	झूठ बोलता है जो औ कसमे खाता है
पुत्र	जो ऐसा करें देशद्रोही कहायेंगे ?
मकडफ पत्नी	जो ऐसा करे देशद्रोही कहायेगा और दण्ड पायेगा
पुत्र	क्या जा कसमे खायें और झूठ बोलें वे सभी दण्ड पायेंगे ?
मकडफ पत्नी	उनमे से एक एक
पुत्र	कौन दण्ड देवेगा ?
मकडफ पत्नी	जो है ईमानदार, और कौन ?
पुत्र	तब झूठी कसमे खानवाले मूख हैं क्योंकि झूठ बोलने औ कसमे खानवाले इतन अधिक है कि ईमानदारा की मरम्मत करके रख दें

सन्देशवाहक आता है

सन्देशवाहक	सुखी रह आप, आप मुझे नही जानती यद्यपि मैं आपकी महिमा से परिचित हू मुझको आशका है आप पर कोई सकट अभी अभी आनेवाला है मेरी मानें और आप यहा नही रहे बच्चो को लेकर के निकल जायें आपको डराना यो मुझे एक क्रूर कम लगता है हानि पहुचाना तो बबरता होगी और वह सन्निकट है ईश्वर रक्षा करे

प्रस्थान

मकडफ-पत्नी जाऊँ तो कहा जाऊँ
मैंने किसी का बुरा नही किया
हा, मुझे याद आया
कि मैं जिस दुनिया मे हूँ
वहा बुरा करना है वहुधा प्रशसनीय
और भला करना आत्मघाती कहाता है
तब क्यो मैं नारीसुलभ शब्द यो कहू
कि मैंने किसी का बुरा नही किया है
ये चेहरे कौन हैं ?

हत्यारे आते हैं

हत्यारा तुम्हारा पति कहा है ?
मकडफ पत्नी जहा कही हो वह इतनी कुत्सित जगह नही
कि तुम जैसे लोग वहा पहुच जायें
हत्यारा वह देशद्रोही है
पुत्र झूठ बोलता है तू नीच दुष्ट
हत्यारा क्या कहा

मारता है

पुत्र मुझे मार डाला मा, तू अपनी जान बचा

मर जाता है

मकडफ पत्नी 'खून-खून' कहती हुई भागती है और
हत्यारे उसका पीछा करते हैं

अंक 4 दृश्य 3

मलकम आओ, कोई निर्जन सी छांह खोजकर हम अपना दुखड़ा एक दूसरे से कह लें।

मकडफ क्यों ? शस्त्र क्यों न हाथों में लें और अपना दुखी देश उबारें ? अब हर दिन सूरज उगने पर नयी विधवाओं का विलाप और अनाथ शिशुओं का क्रन्दन सुन पड़ता है। आकाश नयी नयी विपदाओं से आहत होकर चीत्कार करता है मानो स्वदेश के दुख से वह भी दुखी हो।

मलकम मैं इसका प्रतिकार करूँगा, वह समय आयेगा और मित्र साथ होंगे किन्तु यह तो कहो कि यह अन्यायी, आज जिसका नाम लेते हमारी जीभ पर छाले पड़ते हैं, क्या कभी दयालु माना जाता था ? तुम तो उसके प्रिय थे और उसने अब तक तुम्हारा प्राण नहीं लिया। मैं इतना बड़ा नहीं पर इस योग्य तो हूं कि मेरे बदले में तुम उससे कुछ पा लो और तुममें एक दुर्बल अबोध बकरे को क्रुद्ध देवता पर बलि चढ़ाने की बुद्धि भी है।

मकडफ मैं कपटी नहीं हूँ।

मलकम किन्तु मकबेथ है। कोई शीलवान भी राजसी क्रोध से कुछ कर डाल सकता है। सुनो, मैं समझ नहीं पाता हूँ कि तुम क्या हो

और क्यो अपना देश और घरबार छोड चले आये हो। मुझे सन्देह होता है।

मक्डफ मैं हताश हो चुका हूँ। अत्याचार, अपना साम्राज्य फैला, मेरे देश का रक्त बहने दे क्योंकि सज्जनता तेरे प्रतिरोध का साहस नहीं करती है। वह तेरे नाम से डरती है। महानुभाव, आपका मंगल हो। मैं वह दुष्टात्मा नही हूँ जो आप मुझे समझे हैं। अत्याचारी के चंगुल म दबी हुई समस्त भूमि और दूर देशों से छीनी हुई उसकी सम्पत्ति भी मुझे डिगा नही सकती।

मलकम मेरी बात का बुरा मत मानो। मैं यह नही कहता कि मुझे तुमसे भय है। मैं भी जानता हू कि मेरा देश पापी के जूए तले पिसता है, उसकी आँखें आसूभरी और शरीर घायल है और हर दिन वह एक और घाव खाता है। मैं यह भी जानता हूँ कि इस अन्याय के विरुद्ध हजारों हाथ उठेंगे और एक दिन हम अत्याचारी का सर कुचलेंगे किन्तु जिस दिन यह होगा, मैं यह भी जानता हूँ कि उस दिन मेरा देश पहले से अधिक और अनेक विधि से, अपने नये शासक के हाथो दुख का भागी होगा।

मक्डफ ऐसा शासक कौन होगा?

मलकम मैं अपने को कहता हूँ। जानता हू कि मुझम पाप के अनेक रूप इस तरह समाहित हैं कि जब वे प्रकट होगे, पापी मैकबेथ दूध का धोया दिखेगा और जनता उसे मेरे अनन्त दुष्कर्मों की तुलना म देवतुल्य समझगी।

मक्डफ रौरव नरक मे भी मैकबेथ जैसा पापी नही होगा।

मलकम मैकबेथ हत्यारा होगा मानता हू, मानता हू कि वह विलासी लोलुप, मिथ्या, कपटी, छली ईर्ष्यालु और सब कुकर्मों से भ्रष्ट है जिनके कोई नाम हैं, किन्तु मेरी वासना की तो कोई थाह नही। तुम्हारी पत्नियाँ, पुत्रिया, दाइयाँ, दासिया सब मेरी लिप्सा की अग्नि बुझा नही सकती और जो मुझको रोकेगा वह जीवित रह नही सकता। ऐसे किसी से तो भला है कि मैकबेथ ही राज करे।

मकडफ निरकुश वासना अत्याचार है और उसने अनेक सिंहासन असमय मे खाली कराये हैं किन्तु तुम जिस पर भी आसक्त हो उसे तुम चुपचाप बिना जतलाये माँग ले सकते हो या भी, अनेक स्त्रियाँ

होंगी जो तुम पर समर्पित होने को लालायित हो और होकर गौरवान्वित हो।

मलकम — यही नहीं, मुझमे एक अत्यन्त बडा रोग है कि मेरे लोभ की कोई सीमा नही। वह निब ध है और मैं किसी सामन्त की भूमि, किसी के रत्न, किसी का महल कभी भी हडप सकता हू और यह भूख ऐसी है कि जितना खाता हूँ उतनी ही बढती है, इसलिए मैं भलो और ईमानदारा के विरुद्ध झूठे अभियोग कर उनका विनाश करता हू जिसस उनका धन मेरा हो जाय।

मक्डफ — लोलुपता आत्मघाती है यह देहलिप्सा से कही अधिक भीषण है और इसकी जड कही अधिक गहरी। इस तलवार ने अनक राजाओ को मौत के घाट उतारा है, फिर भी तुम चिन्ता न करो। तुम्हारा देश तुम्हे बहुत द सकता है और यह दोप अय गुणो की तुलना मे बहुत साधारण है।

मैलकम — पर वे गुण मुझमे हैं नही। राजा होने के योग्य गुण जैसे सत्य न्याय, सयम, स्थैर्य, कृपा निष्ठा, करुणा, विनय, श्रद्धा, धीरज, साहस और दढता मुझे अज्ञात है। किन्तु दुष्कम कई कई गुन होकर मुझमे विलास करत है—हा, मुझ यदि सत्ता मिले तो मैं प्रेम के अमृत मे नरक घाल डालू, जन जन की शान्ति को नष्ट कर दू और धरती पर जितनी एकता हैं उसे तोड दू।

मकडफ — मेरे देश ! मेरे देश !

मलकम — ऐसा कोई व्यक्ति यदि शासन के योग्य हो तो कहो जैसा मैंने बताया है ?

मकडफ — शासन के योग्य ?—वह जीने के योग्य नही। मेरे अभागे राष्ट्र ! अत्याचार से तू कब मुक्त होगा ? देख, राज्य का सच्चा उत्तराधिकारी अपने ही शब्दो मे पतित और अयोग्य है। वह अपने वश का कलक है। मैलकम, तेरा पिता सन्त था, मा वत्सला थी। पर ईश्वर तेरा भला करे ! जो दुर्गुण तूने गिनाये हैं उन्ही के कारण तो मैं देश छोडकर आया हू—अब कहा जाऊँ ! बस, आशा की हल्की सी ज्योति भी बुझ गयी।

मलकम — तेरे ये साधु शब्द सुनकर मेरा सब स देह जाता रहा। मुझको विश्वास है कि तू सच्चा वीर है। राक्षस मैकबेथ ने इसी तरह के छल से मुझे फुसलाना चाहा था और अब मैं किसी पर सहसा

विश्वास करना नही चाहता हू। मैं तेरे साथ हूँ, तू मुझे राह दिखा, मैंने अपने विषय मे जो कुछ कहा था वह सच मत मान। मैंने अभी तक स्त्री को नही जाना झूठ कभी नही बोला, पराया धन नही ताका, कभी धर्म नही छोडा और विश्वासघात शैतान से भी नही करूँगा। जीवन म और सत्य मे मेरी आस्था है और पहला झूठ वही था जो मैंने अभी अपने बारे मे तुझसे कहा था। मैं जो हू तेरा हू और अपने दुखियारे देश का हू। हम तेरे आने के पहले ही एकत्र हो रहे थे। क्या ? चुप क्या रह गये ?

मकडफ ऐसी प्रिय और ऐसी अप्रिय घटनाएँ एक साथ देखकर। वह देखो कौन आता है ?

रोस का प्रवेश

आओ मेरे प्यारे भाई, देश का क्या समाचार लाये हो ?

रोस हतभाग्य मातृभूमि, अपनी सूरत से वह डरने सी लगी है। अब वह हमारी मा नही रही हमारी कब्र बन रही है। वहा कोई, जो कुछ भी जानता है मुस्कराता नही है, आहे और कराहे आकाश को चीरती हैं, और भीषण वेदना ही एक समान सबकी सम्पत्ति है। जब कोई मरता है तो कोई नहीं पूछता कि कौन था और जो जीते हैं वे अपने गले के हार मुरझाने के पहले मर जाते हैं।

मकडफ मेरी पत्नी कैसी है ?

रोस ठीक ही हैं।

मकडफ और मेरे सब बच्चे

रोस वे भी ठीक हैं

मकडफ पापी ने उनकी शान्ति मे विघ्न नही डाला ?

रोस नही, जब मैं चला तब वे पूर्ण शान्ति मे थे

मकडफ शब्दो की कजूसी मत करो, कुछ और कहो

रोस जब मैं आया तो अफवाह थी कि कुछ और लोग मारे गये हैं, जो सही ही होगी क्योकि मैंने जालिम का पजा उठा हुआ देखा था।

मलकम से

अब समय आ गया है कि तुम मदद करो। तुम्हारी एक दृष्टि

देश मे सैनिका को जन्म देगी, औरतो को युद्ध करना सिखलायेगी ताकि वे अपने पर आयी विपत्ति का दमन कर सकें।

मलकम धीरज धरो, हम आ रहे हैं।

रोस कहीं मैं भी कोई ऐसा शुभ समाचार तुमको दे सकता ! पर मेरे पास जो शब्द है वे मरुथल मे कहने योग्य है जहाँ वे किसी कान मे न पड सकें।

मकडफ वे जिसके विषय मे हैं वह घटना सावजनिक है या व्यक्तिगत है ?

रोस ऐसा कौन सच्चा प्राणी है जो दूसरो का दुख न बँटाता हो पर यह मुख्यत तुम्हारे विषय मे है।

मकडफ यदि ऐसा है तो तुम शीघ्र कह डालो।

रोस सुनकर तुम मेरी बोली से सदा के लिए घृणा मत करने लगना क्योंकि तुमने ऐसे विदारक शब्द कभी नही सुने होंगे।

मकडफ हू, कुछ कुछ समझ रहा हू।

रोस तुम्हारे दुग पर आक्रमण हुआ, तुम्हारी पत्नी, तुम्हारे बच्चे बर्बर हाथो से काटे गये कस, यह वणन करना मेरे बस का नही नहीं।

मलकम हे ईश्वर—अरे बन्धु ऐसे मुह मत ढापो, पीडा को शब्द दो। वह वेदना जो व्यक्त नही होती, भयाकुल हृदय मे तडपती रहती है और उसे विदीण कर सकती है।

मकडफ मेरे बच्चे भी ?

रोस हा, पत्नी बच्चे, सेवक, जो भी मिले।

मकडफ और मैं वहा से इतनी दूर था ? पत्नी भी ?

रोस मैने अभी कहा।

मलकम धीर धरा अपने प्रतिकार को हम इस भीषण दुख की औषधि बनायेंगे।

मकडफ उसके कोई सन्तान नहीं है। मेरे सब प्यारे छौने ? तुमने क्या कहा ? सब ?

मलकम मनुष्य की तरह विरोध करो, मैकडफ।

मकडफ करूँगा पर मुझे मनुष्य की तरह अनुभव भी करने दो।
कौन भूल सकता है वध दिल के टुकडो का
ईश्वर तकता रहा
जबकि लिया जाता था उनसे प्रतिशोध

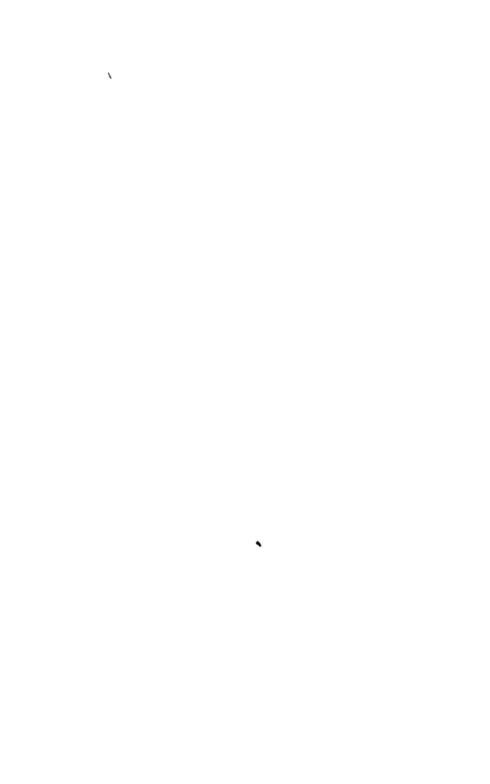
पिता के कारण ?

मलक्म   प्रतिहिंसा के इस पत्थर पर तलवार को
सान चढ़ाओ साथी
क्रोध करो, मत बैठो मन मसोस हो प्रचण्ड

मकडफ   हे ईश्वर, खींच दुष्ट मैकबेथ को दूर से
खड्ग की पहुंच में मेरी ले आ
फिर भी वह छूट जाय
तो उसको दे क्षमा

मैलक्म   पुरषोचित शब्द ये तुम्हारे हैं
मैकबेथ का अन्तकाल आया है पास
और देते हैं देवता हमको आशीर्वाद
धीर धरो
कोई रात इतनी लम्बी नहीं
जिसका दिन ही न हो
चलो, युद्ध की रचना करें, चलो

प्रस्थान



पाँचवाँ अंक

अक 5 दृश्य 1

डन्सिनेन किले का एक कक्ष, चिकित्सक और धाई का प्रवेश

चिकित्सक मैंने दो रात तुम्हारे साथ साथ उस पर निगरानी की परन्तु तुम्हारी बात का कोई प्रमाण न पाया। पिछली बार वह कब चलती दिखी थी ?

धाई जब से महाराज युद्धभूमि को गये मैंने महारानी को कई बार देखा है कि वह बिस्तर से उठती हैं दोशाला ओढती हैं अलमारी खोलती हैं, कागज निकालती हैं उसे मोडकर उस पर लिखती हैं, अपना लिखा पढती हैं फिर उसे बन्द कर बिस्तर पर चली जाती हैं और यह सब जब वह करती है तो गहरी नीद सोयी रहती हैं।

चिकित्सक यह तो प्रकृति की विचित्र लीला है—एक ही साथ आखें मूदने का मधुर आनन्द भी और देखने का कौतुक भी। पर यह तो कहो कि रानी को सोते सोते चलने और अन्य कुछ करने के अतिरिक्त क्या कभी कुछ शब्द कहते हुए तुमने सुना है ?

धाई जी हा, किन्तु मैं उनके पीछे वे शब्द कह नही सकती।

चिकित्सक मुझसे कह सकती हो और अच्छा हो कि कह डालो।

धाई न आपसे, न किसी और से क्योकि मैं जो बताऊँगी उसका गवाह कोई नही होगा ।

मक्वेथ पत्नी का प्रवेश हाथ मे दिया है

लो वह आ गयी । मैं निश्चित कह सकती हू कि वह गहरी नीद मे हैं । ध्यान से देखो, छिपकर खडे रहो ।

चिकित्सक इनको यह दिया कहा से मिला ?

धाई यह तो उनके समीप रखा रहता है । उनका आदेश है कि रोशनी बराबर उनके पास रह ।

चिकित्सक देखो, आखें खुली हुइ हैं ।

धाई परन्तु उनकी चेतना बन्द है ।

चिकित्सक अब क्या कह रही हैं ? देखो, हाथ कैसे मल रही हैं ?

धाई यह उनकी आदत है मानो हाथ धो रही हो । मैंने उन्ह कई घडी ऐसा ही करते रहते देखा है ।

मक्वथ पत्नी अभी एक धब्बा बाकी है ।

चिकित्सक सुनो, सुनो, बोल रही हैं । जो वह कह मैं उसको लिख लू जिसस कि बाद मे कही भूल न जाऊँ ।

मक्वथ पत्नी निकल, अभाग धब्ब, कहती हू निकल ! एक, दो, लो वक्त आ गया, कर डालो । क्या, नरक म अँधेरा है ! छि स्वामी, सैनिक और भय ? हमको भय हो ही क्यो ! हमसे कौन जवाबतलब कर सकता है ? हा, मुझे नही मालूम था कि बूढे की देह म इतना खून होगा ।

चिकित्सक कुछ सुना तुमने ?

मकबथ पत्नी फाइफ के राजपुरुष के एक पत्नी थी, सो अब कहाँ है ? अरे, क्या ये हाथ कभी साफ नही होंगे ? बस करो, राजेश्वर, बस करो, ऐसे चौंक चौंककर तुम सब मजा किरकिरा कर रह हो

चिकित्सक भाग जा, भाग जा, तूने वह सुन लिया है जो तुझे नही जानना था ।

धाई उसने वह कह दिया है जो उसे नही कहना था । इसम कोई शक नही । ईश्वर जाने कि उसने क्या किया है ।

मकबथ-पत्नी अभी तक खून की गन्ध नही गयी । अरब के तमाम इत्र इतन से हाथ को सुगन्धित नही कर सकत । ओह ओह ओह !

चिकित्सक कितना गहरा नि श्वास ! हृदय क्लेश से भरा है।

धाई मैं तो ऐसा हृदय अपने सीने में कभी न रखूं जिससे सारे शरीर की गरिमा घटे।

मकवथ पत्नी हाथो को धो डालो, रात के वस्त्र पहन लो, ऐसे पीले मत पडो। मैं तुमसे फिर कहती हू कि वाको दफन हो चुका। वह क्त्र से उठकर नही ग्रा सकता।

चिकित्सक ग्रोह, ग्रोह, यह बात है ?

मकवथ पत्नी सोने चलो, सोने चलो कोई फाटक पर खटखटाता है ग्राग्रो, ग्राग्रो, ग्राग्रो मुझे अपना हाथ दो। जो हो चुका ग्रब वह ग्रन किया नही हो सकता। सोने चलो, सोन चलो, सोने चलो।

वह जाती है

चिकित्सक क्या ग्रव वह बिस्तर पर जायेंगी ?

धाई एकदम जायेंगी।

चिकित्सक ग्रफवाह फली है ग्रस्वाभाविक कम से
ग्रस्वाभाविक कष्ट ही उपजते है। रोगी मन
बहरी तकियो से ग्रपनी व्यथा कथा कहते हैं
बेचारी, उस चिकित्सक नही, ईश्वर की ग्रनुकम्पा चाहिए
हे ईश्वर, ह ईश्वर हम सबको दे क्षमा
उसको सरक्षण दे
उसके सब क्लेश मिटा ग्रौर उस पर दृष्टि रख
ग्रच्छा ग्रव विदा

धाई विदा भला हो तुम्हारा !

प्रस्थान

अक 5 दृश्य 2

डजिनेन दुग क निकट । ढोल और झण्ड । एगस और लेनाक्स का दो अन्य सामन्तों क साथ प्रवेश

सामन्त 1 मलकम की सेना औ' उसके सग मैंक्डफ
आने ही वाले है
आग प्रतिशोध की सुलग रही है उनमे
उनका आमन्त्रण सुन आते हैं और भी

एगस बरनम वन के निकट हम उनसे जा मिलें
उसी रास्ते से वे आने है

सामन्त 2 मैलकम के साथ डोनालबेन भी होगा ?

लेनाक्स नही है, परन्तु कई और हैं
कई युवा साथ है कि जिनकी तरुणाई ने
कल अँगडाई ली है

सामन्त 1 दुष्ट मैक्बेथ क्या करता है ?

सामन्त-2 डजिनेन दुग की सुरक्षा का दृढ प्रबन्ध
कुछ इसको पागलपन कहते है
औ कुछ, जो कम कटु हैं, कहते हैं उग्रता

पर सच तो यह है कि मैकबेथ बौखलाया है
आपे से बाहर हो रहा है वह

एंगस	अब अपने हाथों पर गोपन हत्याओं के चिह्न देखता है वह बार-बार कल तक के स्वामिभक्त करते हैं द्रोह लोग उसके आदेश पर चलते हैं इसलिए कि बस वह आदेश है मन से नहीं चलते उसका राजत्व झूलता है यों उस पर कि जैसे पड़ा बौने पर दैत्य का लबादा हो
सामंत 1	तब उसको कौन दोष दे उद्धत होने पर जब उसके भीतर जो कुछ भी है अपनी ही भर्त्सना करता है
सामंत 2	जो हो, हम बढ़े चलें
लेनाक्स	चलो चलें, बरनम को

प्रस्थान

अंक 5 दृश्य 3

डंजिनेन के दुर्ग का कक्ष, मकबथ, चिकित्सक और सामंतों का प्रवेश

मकबथ और समाचार यहां मत लाओ
जो जायें जाने दो
जब तक बरनम का वन
उठ करके डंजिनेन को नहीं चला आये
मैं क्यों भय से मरूं ?
मैलकम—वह छोकरा—
क्या उसको औरत ने नहीं जना ?
प्रेतात्माएँ, जो मनुष्यों का विधिविधान जानतीं
मुझसे कह गयी हैं यों 'डर मत, ओ मकबथ,
कोई जो औरत का जाया हो तुझे हरा नहीं सकता'
जाओ, विश्वासघातियो, जाओ
ओ कच्ची उम्र के किशोरों से मिल जाओ
मेरा निर्णायक मन मेरा अंतःकरण
न संशय में डूबेगा न भय से थर्रायेगा

सेटन का प्रवेश

मकबेथ और क्या खबर है ?
सेटन पहले जो आयी थी अब उसकी पुष्टि हुई
मकबथ लड़ूगा मैं तब तलक
जब तलक मेरी हड्डिया पर गोश्त बाकी है
मेरा कवच लाओ
सेटन अभी समय नही आया
मकबथ मैं पहने रहूगा
घोडे दौडाओ औ' छान डालो गाव गाव
जो भय का नाम ले पकड करके फांसी दो
दो मेरा कवच मुझे—

चिकित्सक से

तेरे रोगी का क्या हाल है चिकित्सक !
चिकित्सक वह किसी व्याधि से उतना अस्वस्थ नही
जितना कि आधि से
दुश्चिताएँ उसे सोने नही देती हैं
मकबेथ उसे कष्टमुक्त कर
क्या तू उपचार नही कर सकता है मन का ?
स्मृति से उखाड नही सकता है कोई दुख ?
क्लेश की लिखावट मस्तिष्क से मिटा नही सकता है ?
मीठी विस्मरणवटी देकर
क्या काढ नही सकता है अतर का मलापन
जिससे मन बोझिल है ?
चिकित्सक यह तो रोगी के खुद करन का काम है
मकबथ औषधिया फेंक दो कूडे म
मुझे नही चाहिएँ
लाओ मेरा कवच, पहनाओ
दो मेरा राजदण्ड
(सटन, जल्दी करो)
मेरे सामत आज मुझसे कतराते हैं चिकित्सक !
(यह क्या कर रहे हो ?)

अक 5 दृश्य 4

बरनम वन के निकट का क्षत्र ढोल और झण्ड मलकम, मकडफ, एगस, लेनाक्स, रोस, अन्य साम त और सनिक आत हैं

मलक्म भाइयो, वह दिन अब दूर नही
जबकि नही सोत मे हत्या का भय होगा

साम त 1 निस्मशय

साम त 2 यह जगल क्या है जो दिखता है सामने ?

साम त 1 यह बरनम का वन है

मलकम हर सैनिक एक डाल काट ले
अपने आग रक्खे
इस प्रकार हम अपनी
सरया को शत्रु स छिपा लेंगे
उसे घेर लेंगे देखे जाने के पहले

सनिक ऐसा ही होवेगा

सेना का प्रस्थान

अक 5 दृश्य 5

डन्सिनन दुग के भीतर । झण्डों और ढोल के साथ
मक्बथ, सेटन और सनिक प्रवेश करते हैं

मक्बथ दुग की दिवारों पर ध्वजकेतन फहरा दो, आने दो
जो वे घेरा डालें, उन्हें पड़े रहने दो
जब तक कि भूख और रोग उन्हें खा न जायें
यदि उनमें मिले नहीं होते हमारे भी अनुयायी
हम उनसे जूझते आमने सामने
मारकर उन्हें उनके घर तक पहुंचा देते
कैसा यह शोर है

भीतर से स्त्रियों के रोने का स्वर

सेटन औरतें रोती हैं

जाता है

मकबथ मैं प्राय भूल ही गया हूँ कि भय कैसा होता है

एक समय था कि जब रात मे चीख सुन
खून जम जाता था
दारुण कथा कोई रोगटे खड़े कर देती थी
अब मैं खुद भय के संग हमप्याला हो चुका
संकट से हमारा मन इतना परिचित है
कि और चौंकता नही

सेटन फिर आता है

सेटन	महामान्य, रानी अब नही रही
मकबेथ	उन्हें किसी और समय जाना था
तब इन शब्दों के मानी होते
कल और कल और कल भी
घिसट घिसटकर व्यतीत होवेगा
शेषकाल शेष बचे रहने तक
बीते कल जितने हैं सबने प्रशस्त किये रास्ते
कब्रों तक, मूढ़ों के वास्ते
छोटी सी, दिये की लौ, निबट जा
कि जीवन चलती फिरती छाया है
साधारण पात्र
जो कि खटता है पिसता है
मंच पर
घडी भर
सुनायी फिर नही पडता
मूरख का कहा हुआ किस्सा है जीवन
है गर्जन से तर्जन से भरा और अर्थहीन

चर का प्रवेश

तू बकने आया है जल्दी कह
चर	महामहिम मुझको बतलाना है जो मैंने देखा है
किन्तु जानता नही कि वह कैसे बतलाऊँ

मक्वथ	कुछ तो वह
चर	जब मैं पवत की निगरानी कर रहा था
तब मैंने दृष्टि की बरनम की ओर
तो यह लगा कि वह जगल
धीरे से चल पडा
मक्वेथ	झूठा, गद्दार
चर	यदि जो मैं कहता हूँ वह न हो तो मुझे दण्ड दें
तीन तीन मील तक आप देख सकते हैं
पास आ रहा है वह
जी हा, चलता फिरता
मकवथ	झूठ अगर बोला है तो अगले पेड पर जिन्दा लटका दूगा
लटका रहेगा औ भूख से झुरायगा
जो सच कहा तो मुझको परवाह नही
सकल्प करता हूँ
और प्रेत की वाणी पर शका होती है
जो सत्य के जैसा झूठ बोलती थी यह
कि डर मत जब तक बरनम डञ्जिनेन को न आय
और आज वह डञ्जिनेन चला आता है
अस्त्र लो, अस्त्र लो, और चलो
यदि इसने जो देखा, आया है
तो न भागना होगा और न विलमे रहना
मैं सूरज के प्रकाश से थक गया हू, यह मनाता हू
कि विश्व यह विमर्जित अब हो जाय
खतरे के घण्टे बजाओ, तूफानो, आधियो, आओ
हम कम से कम कवच धारे तो मरेंगे !

अक 5 दृश्य 6

डन्जिनेन दुग क सामने का मदान, मक्बथ का प्रवेश

मक्बथ यो मुझको घेर लिया, भाग नही सकता हूँ
हमलावर कुत्तो से यही निबटना होगा
कौन है कि जिसको औरत ने जना नही ?
ऐसे ही व्यक्ति से मुझे भय है और किसी से नही

एक सनिक आता है

सनिक तेरा नाम क्या है ?
मक्बथ काप उठेगा तू वह सुन करके मैं मैंक्बेथ हूँ
सनिक इतना घणास्पद नाम !
मकबेथ इतना भयकर कह !
सनिक झूठे, कुत्सित पापी,
मेरी तलवार अभी सिद्ध किये देती है

लडत है और सनिक मारा जाता है

मकबथ औरत ने तुझको जना होगा

पर उन हथियारो पर मैं केवल हँसता हूँ
जो कि धारते है नर स्त्री के जने हुए

जाता है घण्टों की आवाज़, मकडफ का प्रवेश

मकडफ शोर इस दिशा मे है, दुष्ट सामने तो आ
तू यदि मारा गया किसी और के हाथो
तो मेरी पत्नी औ' बच्चो के प्रेत मुझे सालेंगे
या तुझको मारूँगा
या इस तलवार को कोरा ही
रख दूगा म्यान मे

जाता है, घण्टे बजत है, मलकम और एक सनिक का प्रवेश

सनिक स्वामी इस ओर आयें
रण मे हम जीत गये
अत्याचारी के जन दोनो ओर लडते हैं
विजयश्री आज आपकी ही है
मलकम शत्रु पक्ष म ऐसे सनिक भी देखे थे
जो कि हमारी खातिर लडते थे
सनिक दुग मे प्रवेश करें

जात हैं घण्टे बजत हैं

अक 5 दृश्य 7

मकबथ का प्रवेश

मकबथ आत्महत्या क्यो करूँ मैं ?
आज जीवित प्राणिया को घाव तन पर सोहते हैं

मकडफ का प्रवेश, दोनों मे युद्ध होता है

थक गया है तू चला जा
रक्त से बोझिल बहुत है आत्मा मेरी
तू भले रण मे कुशल हो
भले ही तेरा दुधारा वध्य वक्षा पर गिरे
वरदान है मुझको कि मेरा प्राण
नारी गर्भ से उत्पन्न कोई हर नही सकता

मकडफ व्यर्थ है वरदान तेरा
जा, कि वह जिसने दिया हो पूछ उससे
वह बतायगा कि मैकडफ
गर्भ माँ का चीरकर काढा गया था
जन्मा नही था

मकबथ नष्ट हो वह जीभ जो यह बोलती है

क्याकि इसन शक्ति मेरी छीन ली है
ग्रोह, जादूगरनियो पर मत कर विश्वास कोई
जोकि दोहरे ग्रथ का खिलवाड करती हैं
एक ग्राशा जगाती है, एक ग्राशा तोडती हैं
मैं नही तुमसे लडूगा

मकडफ तब फिर तू हार मान, कायर
देखेंगे सभी लोग तेरी मुसभरी लाश
ग्रौर यो कहगे 'यह ग्रत्याचारी देखो'

मक्बथ मैं न हार मानूगा
मैं लक्म के चरणो म गिरन को
ग्रौर कायरा के मुह से गाली सुनने को
बरनम वन ग्राया है डजिनेन
ग्रौर सामन तू है स्त्री का जना नही
फिर भी मैं
धारण कर ग्रस्त्रकवच ग्रत तक लडूगा
ग्रा, जा मैकडफ ग्रा, जा
उसको धिक्कार है कि जो पहले 'ठहर' कह

युद्ध ग्रौर मैक्बथ की मत्यु

० ० ०